मासिक
jaihaatkeshvani.com

जयहाटकेश्वरी

मार्च 2016, वर्ष : 10, अंक : 11

Franchisee Invited

Start Your Own Preschool, With KNMS

[Playgroup (Day Care)/Nursery/Jr.K.G./Sr.K.G.]

Call Now
9950656082

K. N. MODEL SCHOOL
KNMS
"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

An Initiative of Kanhaiya Lal Nagar Sansthan, Well Known as K. N. Sansthan, Udaipur.

Contact:

2-A, Mahaveer Colony, Opp. TRI, Ashok Nagar, Udaipur-313001, Rajasthan
Email: knms.info@gmail.com

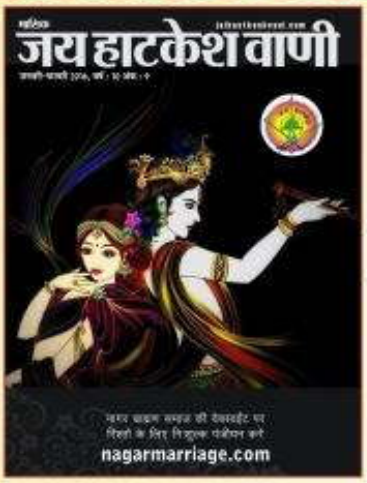

सुविधा का लाभ लें, दुविधा में न पड़ें...

मासिक जय हाटकेश वाणी समस्त नागर ब्राह्मण की प्रतिनिधि पत्रिका है। यह सामाजिक पत्रिका होने के बावजूद आधुनिक साधनों से सुसज्जित है। आप समाजजन अपनी प्रकाशन सामग्री ईमेल, वाट्सअप के माध्यम से भेज सकते हैं तथा डाक विभाग की लापरवाही या अनियमितता के चलते यदि पत्रिका आपको प्राप्त न हो, तो वाट्सअप पर हमें सीधे शिकायत के साथ अपना पोस्टल एड्रेस भेज सकते हैं, सम्पूर्ण सेवा भावना का यह प्रकल्प है तथा 'वाणी' से सम्बंधित प्रत्येक जवाब तलब के लिए हम 24 घंटे सात दिन उपलब्ध हैं, हमारा निवेदन है कि आप पाठकों की समस्याओं का समाधान हम बेहतर तरीके से निकालने में सक्षम है, यदि इस सम्बन्ध में आपको कोई विघ्न संतोषी तत्व बहकाने की कोशिश करे तो कृपया सावधान रहें। हम तथा इसी तरह की सेवाएँ देने वाले सभी लोग एक जैसी समस्या एवं परिस्थिति से जुझते हैं, डाक व्यवस्था की गड़बड़ी से सभी परिचित हैं, लेकिन मजबूरी है कि यही सबसे सस्ता साधन हैं, अतः आप सब सहयोग बनाएं रखें तथा समाज की जागरुकता के यज्ञ में अपनी आहुती दें। यही निवेदन हैं।

-सम्पादक

सदस्यता-नवीनीकरण आवेदन पत्र

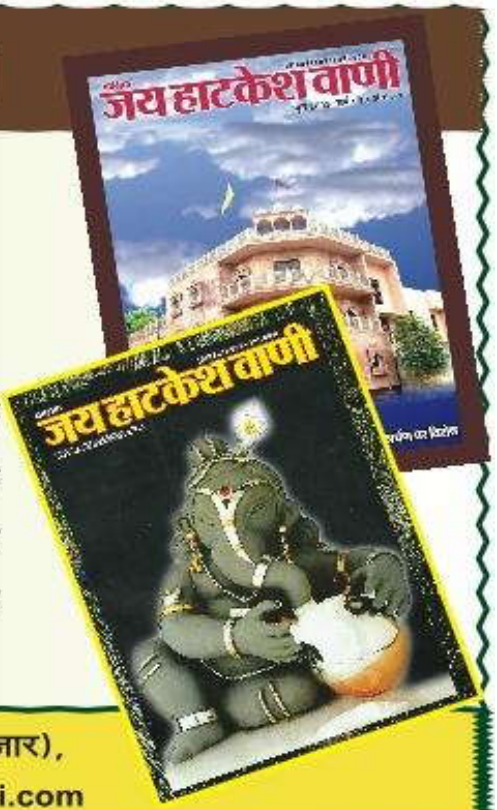

मैं .....

डाक का पूरा पता (पिनकोड सहित) .....

.....

मासिक **जय हाटकेश वाणी** का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित आजीवन सदस्यता शुल्क 550 रु. नगद/चैक/ड्राफ्ट या आपके बैंक अकाउंट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते 'जय हाटकेश वाणी' केनरा बैंक शाखा एम.जी. रोड़, (गोराकुण्ड) इन्दौर में खाता क्रमांक - 0325201004027 में जमा किया है।

सम्पर्क- **जय हाटकेश वाणी**, 20 जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार),
इन्दौर-452002 मो. 9926285002, 9926563129 www.jaihaatkeshvani.com

E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

संस्थापक

श्री शिवप्रसादजी शर्मा श्रीमती प्रभा शर्मा

प्रेरणा स्त्रोत

श्री गोवर्धनलालजी मेहता

श्री विष्णुप्रसादजी नागर

संरक्षक

पं.श्री कमलकिशोर नागर, सेमली
पं.श्री आर.के.झा, कोलकाता
पं.श्री पुरुषोत्तम (परेश) पी.नागर, मुम्बई
पं.श्री महेन्द्र नागर, बैंगलौर
पं.श्री नवरत्न व्यास, हैदराबाद
पं.श्री हरिप्रसाद नागर, अकलेरा
पं.श्री सुभाष व्यास, भोपाल
पं.श्री ओमप्रकाश मेहता, भोपाल
पं.श्री सुनील मेहता, मन्दसौर
पं.श्री सुरेन्द्र मेहता (सुमन) उज्जैन
पं.श्री कृष्णानंद मेहता, खण्डवा

प्रधान सम्पादक
सौ.संगीता दीपक शर्मा

सम्पादक
सौ.दिव्या अमिताभ मंडलोई
सौ.दमिता नवीन झा

विज्ञापन
पवन शर्मा-9826095995

ईमेल पर भेजी गई प्रकाशन सामग्री हेतु कन्फर्म अवश्य करें

मासिक जय हाटकेश वाणी में प्रकाशन हेतु सामग्री प्रतिमाह 20 तारीख तक अवश्य भेज देवें। यदि ईमेल पर प्रकाशन सामग्री भेजते हैं तो प्राप्ति के सम्बंध में मनीष शर्मा मो. 9926285002 से कन्फर्म अवश्य कर लें।

अपने फोटो एवं प्रकाशन सामग्री आप वाट्सएप पर भी भेज सकते हैं इस हेतु ये नम्बर सेव कर लेवें।

मो. 8878171414, 9826146388

'वाणी' प्राप्ति स्थल

डाक एवं पोस्ट की अव्यवस्था के चलते कई स्थानों पर जय हाटकेश वाणी पहुँच नहीं पाती है, यदि आपको निर्धारित समय तक पत्रिका न मिल पाए तो अपना नाम पता निम्नलिखित मोबाइल नं. पर मैसेज करें- मो. 9425063129.

वाणी प्राप्ति हेतु निम्न स्थानों पर स्थानीय स्तर पर सम्पर्क किया जा सकता है, जहां पत्रिका की अतिरिक्त प्रतियां भेजी जाती है। इन स्थानों पर स्वयं जाकर भी प्राप्त कर सकते हैं।

भोपाल - श्री सुभाष व्यास- अरेरा कॉलोनी फोन 0755-2463303
रतलाम- श्री ओम त्रिवेदी- टी.आय.टी. रोड़ फोन 07412-230222
उज्जैन- श्री संजय जोशी इंदिरा नगर मो. 9425917540
(इनके अलावा नागर बहुल नगरों में जो समाजजन पत्रिका वितरण में सहयोगी बनना चाहते हैं तो वे हमसे अवश्य सम्पर्क कर लेवें। धन्यवाद

आगामी अंक अप्रैल 2016 में सिंहस्थ पर्व विशेषांक

जय हाटकेश वाणी

सम्पर्क- अवन्तिका परिसर, 20, जूनी कसेरा बाखल, (खजूरी बाजार), इन्दौर-452002
फोन : 0731-2450018, मो. 9826095995, 9926285002

मूल्य 10/-रुपये

website : www.jaihaatkeshvani.com, / E-mail : jayhotkeshvani@gmail.com / manibhaisharma@gmail.com

जीने की राह

भगवान ने विभिन्न अवतारों के माध्यम से मनुष्य को जीने की राह बताई है, भगवान श्री राम मर्यादित जीवन हेतु संदेश देते हैं, उनकी लीलाओं में आदर्श परिवार तथा ऊँच-नीच का भेदभाव खत्म करने की प्रेरणा है, तो भगवान श्री कृष्ण के उपदेशों में बहुत ही सरल भाषा में जीवन जीने तथा मुक्ति का मार्ग बताया गया है। एक समय था जब ये दोनों प्रामाणिक ग्रंथ घर-घर में उपलब्ध थे तथा निश्चित रूप से पढ़े भी जाते थे। आज ये ग्रंथ घर-घर से गायब है तथा उसी के साथ आदर्श जीवन की परिकल्पना भी धूमिल हो गई है। सारी दुनिया को छोड़ो, सब अपने-अपने कर्म के माध्यम से अपनी दशा और दिशा तय कर रहे हैं, परन्तु नागर जनों से मेरा विशेष आग्रह है कि वे श्रीमद् भगवद् गीता में भगवान श्रीकृष्ण के बताए रास्ते पर चलकर स्वयं की एवं समाजोत्थान की भावना को प्रबल करें। भगवान ने हजारों वर्ष पूर्व जो बातें कही थी, आज हमारे समाज के लिए प्रासंगिक है। भगवान ने कहा कि मनुष्य अपनी जरुरत से अधिक सम्पत्ति एकत्र न करें, तथा अपनी जरूरतें भी सीमित रखें, सदैव भगवान का नाम स्मरण करता रहे, क्योंकि वे मोक्ष का एकमात्र उपाय बताते हैं कि मृत्यु के समय मनुष्य के मुख पर भगवान का नाम होना चाहिए, स्वाभाविक है कि मृत्यु का समय तय नहीं है, अतः सदैव भगवान का स्मरण करते हुए अपने कर्म में प्रवृत्त रहना चाहिए, अपने कर्मफल भगवान को समर्पित कर देना चाहिए। भगवान को पाने के लिए भजन-कीर्तन, पूजन, तीर्थ, यज्ञ, भक्ति आदि साधन है, परन्तु इनकी तुलना वे जनसेवा से करते हैं, सेवा को भी वे पूजा और भक्ति का दर्जा देते हैं, अतः भगवान श्रीकृष्ण के कथनानुसार सभी नागरजन अपनी जरूरत से अधिक संग्रहित धन को समाजसेवा हेतु समर्पित कर सकते हैं। आज समाज में अशिक्षा की बड़ी समस्या है, ग्रामीण क्षेत्र में साधनाभाव के कारण बच्चे पढ़ नहीं पा रहे हैं, प्रत्येक बड़े शहर में समाज के बच्चों के लिए छात्रावास की आवश्यकता है। समाज के युवाओं को आगे बढ़ाकर ही आदर्श समाज की परिकल्पना साकार हो सकती है, प्रत्येक जरूरतमंद युवा को उसकी शिक्षा या रोजगार के लिए दिया गया सहयोग समाजोन्नति का उपाय बनेगा, समाज में विभिन्न अवसरों पर किया जा रहा धन का अपव्यय रोक कर उसे स्वर्णिम भविष्य हेतु व्यय करना पड़ेगा, तभी समाज की उन्नति होगी।

भगवान ने हजारों वर्ष पूर्व जो बातें कही थी, आज हमारे समाज के लिए प्रासंगिक है। भगवान ने कहा कि मनुष्य अपनी जरुरत से अधिक सम्पत्ति एकत्र न करें, तथा अपनी जरूरतें भी सीमित रखें, सदैव भगवान का नाम स्मरण करता रहे, क्योंकि वे मोक्ष का एकमात्र उपाय बताते हैं कि मृत्यु के समय मनुष्य के मुख पर भगवान का नाम होना चाहिए।

-संगीता-दीपक शर्मा

अम्बाजी में रात्रिपूजन का आयोजन 25 से 30 अप्रैल तक

अम्बाजी (गुजरात) में इस वर्ष 25 से 30 अप्रैल 2016 तक रात्रिपूजा का भव्य आयोजन समग्र गुजरात नागर परिषद् महामंडल के तत्वावधान में आयोजित होगा।

ज्ञातव्य है कि अम्बाजी का मंदिर अपना नागर जाति का ही है, किन्तु वर्तमान में इसका प्रशासन गुजरात राज्य के तहसीलदार पद के प्रशासनिक अधिकारी द्वारा किया जाता है। यहाँ नागर जाति को दो अधिकार मिले हुए हैं, (प्रथम) माताजी को भोग लगाने के लिए थाल अर्पण का अधिकार तथा (दूसरा) माताजी के निज मंदिर में जाकर माताजी के गौरव को मस्तक लगाकर तथा चरण पादुकाओं को मस्तक पर लगाकर आशीष प्राप्त करने का अधिकार। ये दोनों लाभ नागर जाति के लोग रात्रिपूजा द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं। बड़े हर्ष का विषय है कि इस आयोजन में हिस्सा लेने वाले जाति बंधुओं की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है, गत वर्ष 1500 से अधिक जातिबंधु देशभर से पधारे। सभी मेहमानों के निवास की व्यवस्था माढ़ एवं धर्मशालाओं में की जाती है तथा फलाहार एवं भोजन उपलब्ध करवाया जाता है।

जो भी समाजजन इस वर्ष आयोजित रात्रिपूजा में हिस्सा लेना चाहे, वे श्री नरेश राजा अहमदाबाद से उनके मो. 09426749833 से सम्पर्क कर विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

कर्मकांड की बौद्धिकता का प्रतीक

नागर ब्राह्मण का प्रतीक चिन्ह

नागर ब्राह्मण के प्रतीक चिन्ह का उपयोग पत्र-पत्रिकाएँ, मुखपत्र आदि में किया जाता है। इस चिन्ह में सूर्य की आभा के मध्य श्री हाटकेश्वर मन्दिर के शिखर के साथ कलम, बरछी और तीसरा चिन्ह है जिसे अब तक हम सभी 'करछी' सम्बोधित करते हैं। इस प्रतीक चिन्ह को ध्यान से देखने पर लगता है कि वह तीसरा चिन्ह करछी न होकर हवन में उपयोग होने वाला घृत की आहूति देने का साधन (यंत्र) स्त्रुवा या 'श्रुवा' है। कलम हमारी बौद्धिक क्षमता का प्रतीक है। तो बरछी हमारे शौर्य का प्रतीक है। समय आने पर हम अपनी रक्षा करने में सक्षम है। वहीं तीसरा चिन्ह हमारी कर्मकाण्ड की बौद्धिकता का प्रतीक है। यह हम मानने को क्यों तैयार नहीं है, यह समझ से बाहर है। एक बार पूर्व में भी मैंने इसी पत्रिका के माध्यम से यह प्रश्न समाज के बौद्धिक वर्ग एवं वरिष्ठों के सम्मुख रखा था, किन्तु इसकी अनदेखी की गई। अतः पुनः मेरा समाज के प्रतिष्ठित वर्ग एवं पदाधिकारियों से विनम्र निवेदन है कि इस पर चर्चा और निर्णय लेने का साहस जुटाएँ एवं करछी के बजाए श्रुवा को मान्यता देवें और इसे मान्य करें।

-डॉ.बालकृष्ण व्यास- एल.आई.जी.सी. 12/12, ऋषिनगर, उज्जैन, मो. 9424045826

खेद प्रकाश

मासिक जय हाटकेश वाणी के जनवरी-फरवरी 2016 संयुक्तांक में प्रकाशित लेख 'उच्च शिक्षा हेतु समाजजन योगदान दें' में मुद्दे को राष्ट्रीय स्तर पर व्यापकता एवं महत्व बताने हेतु भारत का मानचित्र प्रकाशित किया गया है, उपरोक्त मानचित्र इंटरनेट के सौजन्य से प्राप्त किया जाकर त्रुटिपूर्ण है। त्रुटिपूर्ण मानचित्र प्रकाशित होने की सूचना हमें समाज के जागरुक पाठकों से प्राप्त हुई है। इस बारे में हमें खेद है, तथा भविष्य में राष्ट्रीय चिन्हों का सावधानी से उपयोग एवं प्रकाशन हेतु हम संकल्पित है।

-सम्पादक

खजराना गणेश मंदिर के मुख्य पुजारी पं. भालचन्द्रजी भट्ट की प्रथम पुण्यतिथि 5 फरवरी 2016 को मंदिर परिसर में वृंदावन के रसिक पागल बाबा द्वारा सुमधुर भजनों की प्रस्तुति दी गई। इस आयोजन में बड़ी मात्रा में धर्मालुजनों, गणमान्य नागरिकों ने दादा को श्रद्धासुमन अर्पित किए। पुत्र पं.जयदेव भट्ट ने सभी भक्तजनों का आभार व्यक्त किया।

जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाईयाँ...

चि. कुन्दन

26 मार्च

(सुपुत्र- दयाशंकर (गुड्डु)-सौ.प्रवीणा रावल)
दादा-दादी- श्री रणछोड़लालजी-सौ.प्रभादेवी रावल
बुआमाँ- श्रीमती जानकीदेवी नागर
बड़े पापा-मम्मी- श्री जगदीश-सौ.पुष्पा रावल डेलची
श्री राहुल-सौ.आशा रावल इन्दौर, श्री अशोक-सौ.ललिता रावल, डेलची
पारनाना- श्री मांगीलालजी नागर
नाना-नानी- श्री मनोहर-सौ.प्रतिभा नागर
मामा-मामी- श्री आशुतोष-सौ.रीना नागर, श्री अंचल-सौ.प्रगति नागर
भैय्या-भाभी- संजय-सौ.भारती रावल, डेलची
भाई-बहन- सुनिल, सुधीर, मोना, कविता, यश (चिन्टू), अमिषा, लक्की, अमन एवं रुद्राक्ष रावल

प्रतिष्ठान- रावल कृषि फार्म डेलची जिला उज्जैन
रावल कृषि सेवा केन्द्र माकड़ोन
श्री गणेश महिमा प्रसाद भण्डार
श्री गणेश मंदिर परिसर, खजराना, इन्दौर

:: निवास ::
4, गणराज नगर, खजराना, इन्दौर
मो. 9981929595
9893169285

प्रगतिपथ की उपलब्धियाँ

शिव की अंजुली से प्रस्फूटित हुई वाणी

मासिक जय हाटकेश वाणी के प्रकाशन का किस्सा जितना दिलचस्प है, उसकी प्रगति यात्रा एवं उपलब्धियों के पीछे भावना एवं कर्म के साथ आशीर्वाद एवं दुवाओं की पृष्ठभूमि भी उतनी ही उजली है। जय हाटकेश वाणी का प्रकाशन प्रारम्भ होने के पीछे शिवांजलि पारमार्थिक ट्रस्ट की भूमिका रही है। इन्दौर में सूरज नगर में समाज को धर्मशाला हेतु भूमि दान में मिली तथा शिवांजलि ट्रस्ट का गठन किया गया। उपरोक्त गतिविधियों को उज्जैन से प्रकाशित एक अन्य सामाजिक पत्रिका में विशेष महत्व नहीं मिल रहा था, बहरहाल सभी सक्रिय समाजजनों ने सोचा, इससे तो हम भी एक पत्रिका का प्रकाशन शुरु कर लें, तब दिल्ली से एक टायटल रजिस्टर करवाया गया 'शिवांजलि' एवं ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री आशीष त्रिवेदी को वह पेपर सौंप दिया गया। कुछ समय तक पत्रिका प्रकाशन की गतिविधि शुरु नहीं हो पाने के बाद वह टायटल प्रभावहीन हो गया, तब हमारी माताजी श्रीमती प्रभादेवी शर्मा ने कहा कि हम स्वयं ही पत्रिका का प्रकाशन शुरु क्यों नहीं करते तथा उसके बाद जय हाटकेश वाणी का प्रकाशन शुरु किया गया, पत्रिका की सदस्यता के लिए स्वयं बेन श्रीमती प्रभादेवी शर्मा भी हमारे साथ घर-घर गई तथा म.प्र. के नागर बहुल नगरों में सदस्य बनाए, पत्रिका को केवल सूचना का माध्यम न बनाएं रखते हुए समाजोत्थान की अनेक गतिविधियां शुरु हुई। पत्रिका प्रकाशन के नौ वर्ष पूर्ण कर 10 वें वर्ष प्रवेश के पूर्व उसके विस्तार एवं उपलब्धियों की चर्चा प्रासंगिक है-

- जय हाटकेश वाणी ऐसी सामाजिक पत्रिका है, जो केन्द्र एवं राज्य शासन से विज्ञापनों हेतु अनुमोदित है, मध्यप्रदेश के अलावा अन्य राज्यों यथा राजस्थान, छत्तीसगढ़, गुजरात, उत्तर-प्रदेश में भी पंजीकृत है।
- इसका प्रसार क्षेत्र सम्पूर्ण भारत होकर समाज को संगठित करने का लक्ष्य है।
- पत्रिका का प्रथम वर्ष पूर्ण होने पर इन्दौर में एक भव्य सम्मान समारोह आयोजित किया जाकर देशभर के समाजसेवियों को सम्मानित किया गया, जिसमें मालव संत पं.श्री कमलकिशोरजी नागर मुख्य अतिथि थे।
- पत्रिका का तृतीय वर्ष का समारोह भोपाल में रवीन्द्र भवन में भव्य रूप में आयोजित किया जाकर भोपाल के वरिष्ठ समाजजनों का सम्मान किया गया, इस समारोह में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान एवं वरिष्ठ मंत्रीगण अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। इस समारोह के बाद भोपाल में सांगठनिक गतिविधियों में तेजी आई।
- म.प्र. के सम्पूर्ण नागर परिवारों की निर्देशिका 2010 में म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री श्री भगवंतरावजी मंडलोई की स्मृति में प्रकाशित की गई।
- पत्रिका के माध्यम से समाज की गतिविधियों में तेजी आई। आयोजनों की संख्या बढ़ी।
- उज्जैन में श्री हाटकेश्वर धाम के नवनिर्माण का समुचित प्रचार कर प्रोजेक्ट को निर्धारित समय में पूर्ण करने एवं शिवांजलि ट्रस्ट इन्दौर के मंदिर एवं बाउंड्रीवाल निर्माण में प्रचार सहयोग साथ ही समाज के अन्य स्थानों पर चल रहे निर्माण कार्यों का प्रचार भी जारी।
- प्रतिवर्ष मेलापक के प्रकाशन से समाज में अनेकों रिश्ते तय हुए साथ ही इन्दौर में आयोजित सामूहिक विवाहों के आयोजनों में 26 जोड़ों के सामूहिक विवाह में पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका रही।
- प्रतिभाशाली बच्चों को प्रोत्साहन हेतु मंच उपलब्ध करवाया गया।
- श्रीमती प्रभादेवी शर्मा आकस्मिक चिकित्सा सहयोग कोष से अनेक जरूरत मंद मरीजों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया।

शिक्षा के क्षेत्र में भी विद्यार्थियों को यथासंभव सहायता की जाती है, पत्रिका का प्रकाशन किया जाकर समाज के संगठन को मजबूत एवं सक्रिय बनाने के काम में तेजी आई है और यह सिलसिला अनवरत जारी रहेगा। धन एवं समय व्यय के मामले में यह कठिन प्रकल्प है तथा सभी समाजजन यथासंभव सहयोग भी करते हैं। शासकीय सहयोग भी नियमानुसार मिलता है, परन्तु पूर्वजों के आशीर्वाद एवं लाभान्वित हुए समाजजनों की दुवाओं से ही यह कार्य फलीभूत हो रहा है, यह शाश्वत सत्य है।

'मेलापक' से रिश्तों का श्रीगणेश

मासिक जय हाटकेश वाणी के जनवरी-फरवरी संयुक्तांक में प्रकाशित वैवाहिक प्रस्तावों से पहला रिश्ता पेटलावद एवं अहमदाबाद के बीच तय हुआ है। इस बाबद श्री कैलाशचन्द्र सौ.पुष्पादेवी नागर ने हाटकेश वाणी सम्पादक मंडल को धन्यवाद ज्ञापित किया है।

ज्ञातव्य है कि मेलापक में प्रकाशित वैवाहिक प्रस्तावों से प्रतिवर्ष अनेक रिश्ते घर बैठे तय होते हैं। विवाह योग्य युवक-युवती की जन्मकुण्डली विवरण अनुसार मिलान कर आपस में देखभाल करने में समय तो लगता है, ज्ञातव्य है कि अनेक समाजजन तो मेलापक के माध्यम से होने वाले रिश्तों की सूचना देते हैं, जबकि अनेक ऐसे भी हैं जो सूचना भी नहीं देते। हमारा निवेदन है कि ऐसे रिश्तों की जानकारी अवश्य देवें तथा उनके बारे में 'वाणी' में प्रकाशित भी करवाएँ। -सम्पादक

सामाजिक सेवाओं में उल्लेखनीय योगदान के लिए शर्मा बंधुओं का सम्मान

श्री हाटकेश्वर धाम का नवनिर्माण पूज्य गुरुदेव पं.श्री कमलकिशोरजी नागर महाराज की असीम कृपा से हुआ है। न्यास मंडल आपका कृतज्ञ है। इसी कड़ी में पूज्य गुरुदेव ने श्री हाटकेश्वर धाम नवनिर्माण के समय जो भी समस्या का समाधान व व्यवस्था थी वह श्री पवन शर्मा को सौंपी थी।

श्री पवन शर्मा ने न्यास मंडल एवं गुरुजी के बीच सेतु बंध के रूप में मध्यस्थता कर उपरोक्त कार्य में अपनी अहम भूमिका निभाई थी। इसी के मद्देनजर न्यास मंडल ने सर्वानुमति से श्री पवन शर्मा का सम्मान अन्नकूट महोत्सव कार्यक्रम में करने का निर्णय लिया था, परन्तु भाई पवन शर्मा के अस्वस्थ होने से यह सम्मान न्यास द्वारा इनके निवास स्थान पर जाकर प्रदान किया गया। सम्मान के इसी क्रम में जय हाटकेश वाणी परिवार के सदस्य श्री मनीष शर्मा द्वारा श्री हाटकेश्वर धाम के समाचार, फोटो कलेक्शन, डिजाईन आदि कार्य बखूबी निभाया, इस सराहनीय सेवा के लिए न्यास ने आपका भी स्मृति चिन्ह एवं दुपट्टे से सम्मान किया। इस अवसर पर न्यास के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र मेहता 'सुमन' कोषाध्यक्ष श्री रामचन्द्र नागर, सचिव श्री संतोष जोशी, सहसचिव श्री दीपक शर्मा न्यासी सदस्य श्री किरणकांत मेहता आदि उपस्थित थे।

श्री हाटकेश्वर धाम में दानराशि भेंट

श्री हाटकेश्वर धाम युवा टीम (अन्नकूट महोत्सव समिति)	1800.00
श्री मोहनलालजी मगनलालजी नागर जालोर (राज.)	1100.00

भगवान श्री हाटकेश्वर को पीतल की जलाधारी भेंट

श्री हाटकेश्वर धाम में महाशिवरात्रि पर्व पर भगवान श्री हाटकेश्वर को पीतल की नई जलाधारी हमारे आशीर्वाददाता पं.श्री जमनाप्रसादजी पाठक (शुजालपुर वाले) ने सप्रेम भेंट की। न्यास की ओर से श्री पाठक को धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

पढ़ते-पढ़ते, पढ़ाना सीखें...!

जैसा कि आप जानते हैं कि आजकल कोचिंग के क्षेत्र में बहुत स्कोप है। बहुत सारे विद्यार्थी पढ़ने के साथ-साथ कोचिंग पढ़ाकर अपना स्वयं का खर्च निकाल लेते हैं तो कुछ समाजजनों ने कोचिंग को कॅरियर के रूप में भी अपना लिया है, तथा सम्मानजनक धन एवं यश कमा रहे हैं। इन्दौर के सुप्रसिद्ध कॉमर्स व्याख्याता श्री आर.सी.शर्मा सर समाजबंधुओं को एक शानदार अवसर प्रदान कर रहे हैं, वे समाज के इच्छुक विद्यार्थियों को कोचिंग का प्रशिक्षण देंगे। नाममात्र के शुल्क पर जो भी विद्यार्थी अपने विद्याध्ययन का खर्च निकालने, या कोचिंग को कॅरियर के रूप में अपनाने के इच्छुक हैं वे सर से उनके मोबाईल नं. 9926596858, 8989991799, 7024749749 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

ईश्वर से प्रेम करना ही सच्ची भक्ति है - पं. मेहता

रमण रेती में भागवत पंचामृत कथा

श्री बांके बिहारी सेवा संस्थान शाजापुर द्वारा आयोजित पंचम श्री गिरीराज मथुरा एवं वृंदावन यात्रा के दौरान कार्षिणी आश्रम रमणरेती (मथुरा) में भागवत पंचामृत कथा प्रसंग के अवसर पर पंडित लालशंकर मेहता (शाजापुर) ने सुदामा प्रसंग पर कहा - सुदामा जी द्वारिका श्रीकृष्ण से मिलने गये लेकिन कुछ मांगा नहीं, बिना मांगे भगवान ने सुदामा जी को अपने जैसा वैभव शाली बना दिया। मांगने से उतना ही मिलेगा, जितना मांगा है, लेकिन बिना मांगे परमात्मा इतना देंगे कि हम संभाल नहीं पायेंगे। अगर भगवान से कुछ मांगना है तो भक्ति मांगना चाहिए। सेवा संसार की करो प्रेम परमात्मा से करो। ईश्वर से प्रेम करना ही सच्ची भक्ति है। सुदामा जी सहज और सरल थे। जीना सरल है प्यार करना सरल है, हारना और जीतना भी सरल है तो फिर कठिन क्या है? सरल होना बहुत कठिन है। अच्छे लोगों की भगवान परीक्षा बहुत लेता है पर साथ नहीं छोड़ता और बुरे लोगों को भगवान बहुत कुछ देता है, पर साथ नहीं देता।

कथा में निकुंज में बिराजे घनश्याम राधे-राधे - संकिर्तन पर श्रोता भावविभोर होकर नाचने लगे। कथा विराम के बाद श्री बांके बिहारी सेवा संस्थान म.प्र. के अध्यक्ष श्री नीरज व्यास यात्रा प्रभारी श्री संजय नागर म.प्र. नागर परिषद के कोषाध्यक्ष श्री योगेन्द्र त्रिवेदी, उपाध्यक्ष श्री हेमन्त त्रिवेदी, हाटकेश्वर समाचार विज्ञापन प्रभारी श्री मधुसुदन नागर, ने पं. मेहता का शाल, श्रीफल एवं पुष्पहार से स्वागत किया।

उल्लेखनीय है कि दिनांक 11 फरवरी से 16फरवरी तक यह पांच दिवसीय यात्रा दानघाटी से श्री गिरीराज की परिक्रमा के रूप में प्रारंभ हुई। मुखारविन्द जतीपुरा में गोवर्धन भगवान का पंचामृत अभिषेक एवं 56भोग लगाया गया। मथुरा में द्वारिका दर्शन, यमुना पूजन, नौका विहार, श्रीकृष्ण जन्म भूमि दर्शन, कालियादेह, चीरघाट, वृंदावन में बांकेबिहारी के दर्शन, प्रेम मंदिर, गोकुल में बालकृष्ण, बरसाना में राधेरानी के दर्शन, आदि स्थानों का दर्शन कर लगभग 200 कृष्ण भक्तों ने पुण्यलाभ अर्जित किया। यात्रा में आशीष नागर, राजेन्द्र शर्मा, संतोष नागर (देंदला), अभिजीत शर्मा, श्रीमती विद्या नागर, श्रीमती कृष्णा त्रिवेदी, श्रीमती मीनाक्षी नागर, श्रीमती प्रमिला त्रिवेदी, श्रीमती रजनी शर्मा, श्रीमती भावना शर्मा, श्रीमती लक्ष्मी मेहता सहित कई नागर भक्तों ने भाग लिया। स्मरण रहे कि पं. मेहता हाटकेश्वर देवालय न्यास शाजापुर के प्रमुख न्यासी भी हैं।

शाजापुर से आशीष नागर (पप्पू)
मोबा. 94074-22833

शाजापुर नगर पालिका की नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्रीमती शीतल भट्ट का अभिनंदन

म.प्र. नागर ब्राह्मण समाज परिषद् की त्रैमासिक बैठक स्थानीय नागर ब्राह्मण समाज धर्मशाला हरायपुरा में मुख्य अतिथि मप्र नागर ब्राह्मण परिषद के अध्यक्ष राजेश त्रिवेदी टमटा एवं अध्यक्षता परिषद् के पूर्व अध्यक्ष वीरेन्द्र व्यास ने की। विशेष अतिथि म.प्र. नागर युवा परिषद् के अध्यक्ष हेमन्त व्यास, म.प्र. महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती आभा मेहता, परिषद के पदाधिकारी योगेन्द्र त्रिवेदी, हेमन्त त्रिवेदी, योगेन्द्र त्रिवेदी, डॉ.मनोहरलाल शर्मा, डॉ.बसन्त कुमार भट्ट, सुरेश दवे मामा, अरुण व्यास, शाजापुर, नागर महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती प्रेमलता मेहता, सचिव श्रीमती सुषमा नागर थी। इस बैठक में म.प्र. नागर ब्राह्मण समाज परिषद् की सभी शाखाओं के पदाधिकारियों ने उपस्थित हो कर समाज हितों में निर्णय लिये। म.प्र. नागर ब्राह्मण समाज परिषद् के द्वारा शाजापुर नगर पालिका परिषद् की नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्रीमती शीतल क्षितीज भट्ट, पार्षद विलेश व्यास तथा उज्जैन सराफा मण्डल के अध्यक्ष पद पर म.प्र. नागर युवा मण्डल के अध्यक्ष पं.हेमन्त व्यास, कैलाश मेहता, रमेशचन्द्र रावल का सम्मान किया गया।

बैठक में निर्णय लिया गया कि आगामी सिंहस्थ के दौरान समाज के गौरव पं.विजयशंकर मेहता के सानिध्य में हनुमंतधाम प्रवचन दत्त अखाड़ा उज्जैन में आगामी 15 मई को समाज का अन्तर राष्ट्रीय सम्मेलन के साथ महिला सम्मेलन भी आयोजित किया जाएगा। म.प्र. नागर युवा मण्डल के तत्वावधान में अखिल भारतीय संत नरसी मेहता क्रिकेट प्रतियोगिता का खण्डवा में आयोजन होगा तथा समाज को मजबूत करने हेतु वृहद् स्तर पर सम्मेलन आयोजित किये जाएंगे। **-शाजापुर से राजेश नागर**

आपके दिखाए रास्ते पर हम चलते रहें

आम तौर से प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि उसके द्वारा किए जा रहे सद् कार्य निरन्तर चलते रहे, इस निरन्तरता का अर्थ है कि उनके अवसान के बाद भी। यह कार्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी अगर चलते रहें तो सोने में सुहागे जैसा है। आज मेरी चाहत है कि हमारे परिवार ने पूज्य बेन श्रीमती प्रभादेवी शर्मा (अवसान- 23 मार्च 2009) की प्रेरणा से जिस सामाजिक पत्रिका जय हाटकेश वाणी का प्रकाशन शुरु किया, वह अनवरत चलता रहे, मेरे बाद भी। इसके लिए नई पीढ़ी को प्रशिक्षण देने की शुरुआत हो गई है।

यह काम बहुत कठीन है तथा घाटे का भी, लेकिन यह काम पीढ़ीयों से चल रहा है, हमारे नानाजी श्री गोवर्द्धनलालजी मेहता का मैंने सामाजिक पत्रिका हाटकेश्वर समाचार के प्रति समर्पण देखा है। उनके बाद श्रीमती प्रभादेवी शर्मा में भी समाजसेवा के गुण विद्यमान थे, इन लोगों की मानसिकता व्यापक थी, न केवल समाज अपितु अन्य समाज के लोग भी समान रूप से लाभान्वित होते थे, ये समाज को जोड़ना चाहते थे, समाज में जो अलग-अलग घटक है, उन्हें वे आपस में जोड़ना चाहते थे, इसी के अंतर्गत दासाब ने अपने परिवार की दो लड़कियों के रिश्ते राजस्थान में साठोद्रा नागर ब्राह्मण में किए, साथ ही राजस्थान एवं म.प्र. की सीमा पर बसे बड़ी मात्रा में साठोद्रा नागर ब्राह्मणों को उन्होंने म.प्र. के अन्य नागर घटकों से मेलजोल करवाया।

दासाब एवं उनके बाद बेन (प्रभादेवी शर्मा) ने समाज संगठन एवं सेवा का जो कार्य किया उसी को हम आगे बढ़ा रहे हैं। और यह भी कि एक चिकित्सा कोष भी बेन की इच्छानुरूप चल रहा है। मैंने देखा है कि अभाव के दौर में भी विस्तृत परिवार के विभिन्न सदस्य इन्दौर में चिकित्सा लाभ लेने आते थे और हमारे घर पर ही रहते थे, आज हम किसी अस्पताल में जरूरतमंद रोगी का सहयोग करने जाते हैं तो आँखों में खुशी के आँसू जरुर छलक जाते हैं। सब लोगों की अलग-अलग तमन्नाएँ होती है, पर हमारी यही तमन्ना है कि सेवा का जो सिलसिला पिछली तीन पीढ़ीयों से चल रहा है, वह आगे भी चलता रहे।

हमारे बाबूजी श्री शिवप्रसादजी शर्मा (अवसान 1 मार्च 2005) आज से 48 वर्ष पहले इन्दौर में आकर स्थापित हुए थे, स्वयं के परिवार के पालन-पोषण के अलावा समाजसेवा में उनकी भी रुचि रही और मैंने देखा है कि बेन की समाजसेवा की भावना का उन्होंने हमेशा सम्मान एवं सहयोग किया। दरअसल बाबूजी में सेवा के गुण अपने ताऊजी श्री गोपीलालजी शर्मा से आए थे, जो कांग्रेस के प्रतिष्ठित नेता थे एवं कईं वर्षों तक राऊ के सरपंच पद पर काबिज रहे। उनमें भी समाज के प्रति निष्ठा भावना थी, तथा वे तन-मन-धन से समाज कार्य में अग्रणी रहते थे।

सबसे बड़ी बात यह है कि बेन एवं बाबूजी ने अभाव के बावजूद अपने परिजनों से प्राप्त संस्कारों एवं सद्कार्यों को आगे बढ़ाया। हम तीनों भाई एवं पूरा परिवार ही उनके सद्कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं। संगठन एवं सेवा के कार्य में दृढ़संकल्प से लगे हैं। भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमद् भागवत् में कहे गए इन शब्दों का अनुसरण करते हुए कि अपने द्वारा किया गया कार्य मुझे समर्पित कर दो, तुम्हारा अधिकार केवल कर्म पर है, उसके फल पर नहीं। अतः निष्काम कर्म में सब लगे हैं। उसकी व्यवस्था भगवान ही करते हैं, हमें केवल यह संतोष है कि हम तो अपने पूर्वजों के काम को अनवरत जारी रखे हुए हैं। जैसी इच्छा आज हमारे मन में है कि यह कार्य चलते रहना चाहिए, ऐसी ही इच्छा उनके मन में भी रही होगी, यह सोचकर। अब इस बात का कोई महत्व नहीं है कि कौन क्या कहता है, क्या सोचता है, यह सिलसिला यूं ही चलता रहे... चलता रहे... चलता रहे...।

दीपक-सौ.संगीता शर्मा, पवन-सौ.दुर्गा शर्मा, मनीष-सौ.सीमा शर्मा, सौ.ज्योति-राजेन्द्र नागर, पुनीत-सौ.मीनल, सौ.श्रद्धा-मनीष नागर सलौनी, प्रबल, यशस्वी, दिव्यांश, श्रुति, श्रेया, मिष्ठी एवं समस्त परिवार।

असल में वही जीवन की 'चाल' समझता है
जो सफर में 'धूल' को 'गुलाल' समझता है

चुनौतियों को स्वीकार करो
क्योंकि इससे या तो
सफलता मिलेगी
या शिक्षा.

यदि आप गुस्से के एक क्षण में धैर्य रखते हैं, तो आप दुःख के सौ दिन से बच सकते है।

सामाजिक कार्य चाहे व्यक्तिगत हो, या संगठन के द्वारा उसमें प्रत्येक समाजजन को सहयोग की भावना रखना चाहिए। मेरा मानना है कि समाजसेवा किसी भी रूप में की जावे वह आलोचना की शिकार जरुर होती है। लेकिन समाजसेवा करने वालों को फूल पर नजर रखना चाहिए, कांटों पर नहीं, अवगुणों के बजाय गुणों पर तथा नकारात्मकता के बजाय सकारात्मकता पर ध्यान धरना चाहिए।

सकारात्मक वातावरण एवं सहयोग से मिलता है संबल

जय हाटकेश वाणी के बारे में भी जहाँ अनेक समाजजन कठोर रूप से शिकायत करते हैं, वहीं कुछ ऐसे भी स्वजन है जिनके संबल एवं सहयोग से हमें निरंतर प्रोत्साहन मिलता है। मैं यहाँ उषा नगर निवासी श्री पुरुषोत्तम जोशी का उदाहरण देना चाहूँगा, उन्हें भी डाक में पत्रिका न मिलने की शिकायत थी, एक दिन वे ऑफिस में आए तथा उन्होंने अपना पोस्टल एड्रेस कम्प्यूटर में चेक किया, तथा यह निष्कर्ष निकाला कि डाक में पत्रिका नियमित निकल रही है। डाक व्यवस्था में ही गड़बड़ है, तो उन्होंने स्वयं आगे बढ़कर सुदामानगर क्षेत्र के समस्त सदस्यों तक पत्रिका भेजने का जिम्मा उठा लिया।

अब प्रतिमाह वे सभी सदस्यों तक पत्रिका स्वयं जाकर देते हैं, इतनी अधिक आयु के बावजूद वे अपना यह कर्त्तव्य बखूबी निभा रहे हैं। उनकी यह सेवाभावना, कर्त्तव्य परायणता एवं ऊर्जा हमें प्रोत्साहित करती है। उन्हीं की तरह गिरजाशंकर नागर राऊ में सभी सदस्यों तक पत्रिका के वितरण में सहयोग करते हैं श्री योगेश शर्मा खजराना क्षेत्र की पत्रिकाओं का स्वयं अपने खर्च पर वितरण करते हैं। उज्जैन में श्री संजय जोशी, श्रीमती सीमा नागर, श्री गोविन्द नागर अपने पास अतिरिक्त पत्रिकाएं मंगवाकर जिन सदस्यों तक पत्रिका न पहुँचे उन्हें उपलब्ध करवाते हैं। अनेक समाजजन हैं जो सामान्य आग्रह पर तन-मन-धन से सहयोग करने पर तत्पर रहते हैं। ये सब हमारे संबल एवं प्रोत्साहक है जो नकारात्मक ताकतों को कमजोर करने हेतु हमारे साथ खड़े हैं।

राजस्थान के अकलेरा निवासी एड्वोकेट श्री कुलेन्द्रजी नागर ने राजस्थान से लगी म.प्र. की सीमा तथा राजस्थान क्षेत्र के नागरजनों को जय हाटकेश वाणी से जोड़ा है। वे हमारे संबल है, पिछले कुछ वर्षों से सायटिका रोग से पीड़ित होने के बावजूद उनकी भाग-दौड़ थमी नहीं।

पिछले माह उन्होंने हमारे साथ सारंगपुर, पचोर, ब्यावरा एवं नरसिंहगढ़ तथा कोटा-बूंदी का दौरा किया जहाँ सदस्यता नवीनीकरण का कार्य किया गया। श्री कुलेन्द्र नागर जय हाटकेश वाणी की ऐसी खोज है जो समाजसेवा के प्रत्येक कार्य में तत्पर रहते हैं, नीमच में परिचय सम्मेलन हो, (गत आयोजन) या ब्यावरा में प्रस्तावित हाटकेश्वर धाम निर्माण, वे हमारे सामने ही ब्यावरा के श्री रमेशचन्द्रजी नागर से वादा करके आए कि उनके पुनीत सेवा कार्य के लिए सबसे पहले सहयोग राशि वे झालावाड़ जिले से दिलवाएंगे। कोटा के नागर परिषद् अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र मेहता जो गुरुकुल होस्टल चलाते हैं ने अपने यहाँ बैठाकर सभी सदस्यों से मोबाईल पर बात कर सदस्यता नवीनीकरण करवा दिया। उन्होंने कहा कि जब भी समाज के काम से कोटा आओ तो आपके ठहरने एवं भोजन की व्यवस्था उनके द्वारा ही की जाएगी।

कोटा में किंकर हास्पीटल के संचालक डॉ.मृणाल झा ने कहा कि मासिक पत्रिका का संचालन इतना आसान नहीं है, मैं समझ सकता हूँ आप लोग बहुत बड़ा काम कर रहे हैं। मेरा सहयोग आपको सदैव रहेगा। इस प्रकार के अनेक समाजजन हैं जो पत्रिका प्रकाशन के इस दुरुह कार्य को सराहते हैं, सहयोग देते हैं तथा विघ्न संतोषियों द्वारा दिए गए घाव पर मरहम लगाते हैं। खुशी की बात है कि सराहने एवं सहेजने वाले बहुत अधिक है, तथा उनकी सकारात्मकता नकारात्मक तत्वों पर हमेशा भारी पड़ती है।

-सम्पादक

विजय नगर क्षेत्र का जिम्मा श्रीमती आशा शर्मा ने लिया

विजय नगर निवासी श्रीमती आशा रमेशचन्द्र शर्मा ने बताया कि हमारे घर बहुत विलंब से पत्रिका आती है तो मैंने उन्हें बताया कि आपके पूरे क्षेत्र की शिकायत है कहीं विलंब से और कहीं तो मिलती ही नहीं। डाक व्यवस्था में गड़बड़ी है तो श्रीमती आशा शर्मा ने कहा कि उस क्षेत्र की पत्रिकाएं आगामी माह से मैं वितरित कर दूंगी। इससे दो लाभ होंगे, पत्रिका समय पर समाजजनों तक पहुँच जाएगी तथा मेरा क्षेत्र के समाजजनों से सतत सक्रिय सम्पर्क भी बना रहेगा। इसी तरह की पहल करने वाले सक्रिय समाजजनों का हमें इंतजार है।

विकास दुबे का सम्मान

क्षय नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत श्री विकास दुबे (लेबोरेटरी सुपरवायजर जिला इन्दौर) को उत्कृष्ट कार्य हेतु इन्दौर जिले के पर्यवेक्षण हेतु संभागीय संयुक्त संचालक डॉ.शरद पंडित एवं समस्त जिला अधिकारी जिला इन्दौर द्वारा प्रशस्ती पत्र देकर सम्मानित किया गया तथा शासकीय वाहन एम.पी. 02.0348 प्रशस्ति स्वरूप दिया गया।

कु. अदिती बनी बाल वैज्ञानिक

कु. अदिती सुपुत्री- आशुतोष-भावना मेहता, शाजापुर भगवान हाटकेश्वर की असीम कृपा से शाजापुर निवासी श्रीमती अन्नपूर्णा स्व.श्री अशोक नागर की नाती व बुंदी (राजस्थान) निवासी स्व.श्री ईश्वरदत्त मेहता (स्वतंत्रता संग्राम सैनानी) की परपौती कुं. अदिती आशुतोष मेहता को बाल वैज्ञानिक बनने पर बहुत-बहुत बधाई।

अदिती मेहता की ओर से राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद् नई दिल्ली, (NCSTC) के तत्वावधान में आयोजित 23rd Children's Science Congrees (NCSE-2015) में दिनांक 24-12-2015 से दिनांक 31-12-2015 तक अपना शोध पत्र विषय - "Effect of climate change on soil properties and crop production" पर चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, मोहाली (पंजाब) में प्रस्तुत किया गया, जिसमें उनको बहुत सराहना मिली। भगवान हाटकेश्वर की अनुकंपा से अदिती भविष्य में भी अपना तथा अपने समाज व परिवार का नाम रोशन करेंगी।

विदेश

चि.पुनित नागर सुपुत्र-सौ.ज्योति-राजेन्द्र नागर, जो विगत 5 वर्षों से बैंगलोर में एचपी कम्पनी में कार्यरत हैं। वे कम्पनी द्वारा आयोजित बैठक में हिस्सा लेने अटलांटा (यू.एस.) 5 मार्च को रवाना हो रहे हैं। वे 10 दिन वहीं रहकर कम्पनी के भविष्य की योजनाओं पर विचार-विमर्श करेंगे। बधाई।

अजय शर्मा
को बी.ए. द्वितीय वर्ष में 70 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर बधाई
बधाईकर्ता- सिद्धि, प्रीति, धीरज रावल

ट्रैफिक इंस्पेक्टर : तुम गाड़ी बहुत तेज चला रहे थे। चालान होगा। अपना नाम बताओ!
लड़का : तिरुकलवत्या थेक्केपराम्बली मुत्थुरमैय्या स्वामी।
ट्रैफिक इंस्पेक्टर : (नोट बुक बंद करते हुए) ठीक है! जाओ! आइंदा गाड़ी धीमी चलाना।

श्री नमीष मेहता को पीएचडी

राजीव गाँधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय भोपाल द्वारा श्री नमीष मेहता को उनके शोध कार्य "A select study of TQM towards improvement in performance of Indian service industries" विषय पर पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है। श्री नमीष मेहता वर्तमान में टुबा कॉलेज ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी भोपाल में मेकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग में विभागाध्यक्ष के पद पर

कार्यरत हैं। श्री नमीष मेहता के 22 पेपर्स राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय जनरल्स में प्रकाशित हो चुके हैं।

श्री नमीष मेहता को इस गरिमामयी सम्मान के लिए क्रमशः डॉ.अलका मेहता (पत्नी), अथर्व मेहता एवं निषद मेहता (पुत्र) सहित मेहता एवं नागर परिवार से संबंधित सभी सदस्यों ने अपनी शुभकामनाएँ, बधाई एवं आशीर्वाद प्रदान किया है।

वैवाहिक युवक

दक्ष स्व.श्री अखिलेष त्रिवेदी
जन्मदि.11-6-1990 (21.45)
रतलाम
शिक्षा- एम.बी.ए. फायनेंस एंड मार्केटिंग
कार्यरत- नेक्सट एजुकेशन इंडिया प्रा.लि. बिजनेस डेवलपमेन्ट मैनेजर
सम्पर्क- श्रीमती रेखा त्रिवेदी मो. 9827743091

हर्ष नागर
जन्मदि. 5-7-1989
(1.55 ए.एम.) कद- 5'8"
शिक्षा- एमबीए (मार्केटिंग)
कार्यरत- टेरेटरी मैनेजर एशियन पेन्ट्स देहरादून
गौत्र- कश्यप
सम्पर्क- लक्ष्मण नागर मो. 945096140

विकास आशुतोष ठक्कर
माता- श्रीमती नीलम नागर
जन्मदि. 14-5-1986
(5.36 ए.एम.) हिंडोन सिटी
कद- 5'8"
शिक्षा- एम.ए., पीजीडीसीए, एमसीए रनिंग, कार्यरत- रिलायंस कंपनी, जयपुर
सम्पर्क- मो. 9680311187

शुभम अनिल नागर
माता- श्रीमती ऊषा नागर
जन्मदि. 10-4-1988
(सायं 8.7 पीएम)
शिक्षा- बी.टेक.
कार्यरत- लीड इंजीनियर, एचसीएल टेक्नालॉजी
गौत्र- कोडिन्य

निखिल अनिल यशवंत राव मंडलोई

जन्मदि. 21-10-1989
(समय 11.21 पी.एम., नौगांव)
गौत्र- शांडिल्य
कद- 5'8", वजन- 63
शिक्षा- बी.ई. (इलेक्ट्रा. एण्ड कम्यूनिकेशन) और सेप (ऍंफ़)
कार्यरत- सेप कंसल्टेंट एंड इंटलेक्टर ब्रिजवेअर सर्विसेस प्रा.लि. मुम्बई
सम्पर्क- खंडवा
मो. 9977038217, 9617627168

रितेश अरुण शंकर नागर
जन्मदि. 9-8-1989
समय- 8.40 ए.एम., नई दिल्ली, कद- 5'11"
शिक्षा- बी.टेक. (इसीई)
कार्यरत- असि. सेक्शन ऑफिसर सेन्ट्रल सेक्रेटियेट सर्विस, भारत सरकार, नईदिल्ली
सम्पर्क- भगवतगढ़(सवाई माधोपुर)
मो. 8764076354, 9667290857

हर्षित कुलेन्द्र कुमार नागर
जन्मदि. 5-1-1988
(समय-8.00 पी.एम.) इवनिंग
माचलपुर (म.प्र.)
शिक्षा- बी.टेक. इन इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्यूनिकेशन (इंजी.)
कार्यरत- को-फाउंडर एंड डायरेक्टर (3 वर्ष) ओरियन आईटेक सॉल्यूशंस प्रा.लि. जयपुर
सम्पर्क- अकलेरा (राज.) 09413101699

रजत दिलीप नागर
जन्मदि. 14-8-1986
(समय- 12 पी.एम.), शिवपुरी
शिक्षा- बी.टेक. एम.बी.ए. (सिम्बायोसिस)
पैकेज- 12 लाख वार्षिक
गौत्र- पाराशर, कद- 6'2"
सम्पर्क- मो. 9826779169, 8120069775

रोहित शरद जोशी
जन्मदि. 25-9-1986
स्थान- इन्दौर
कद- 5'8"
शिक्षा- बी.सी.ए., एनीमेशन विशेषज्ञता
कार्यरत- बिजनेस (एनिमेशन स्टूडियो)
सम्पर्क- मो. 8989699496
फोन 0731-2436425

गौरव विजय नागर
जन्मदि. 22-9-1983
(समय 10.10 पीएम), लखनऊ, कद- 6'
शिक्षा- मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन (एम.बी.ए.)
कार्यरत-स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया शाहजहानपुर (उ.प्र.)
सम्पर्क- मो.08052976221
09005605506

आकाश पंकज चौबे
दि. 27-1-1989 (मांगलिक)
समय 1.45 ए.एम., भोपाल
शिक्षा- बी.ई. (आय.टी.)
कार्यरत- ग्रेटनर, गुड़गांव
सम्पर्क- 9424444274

वैवाहिक युवती

पूजा मोहनलाल नागर
जन्मदिनांक 21-11-1991
शाम 6 बजे, सारंगपुर
शिक्षा- बी.एस.सी., बी.एड.
कार्यरत- अतिथि शिक्षक
सम्पर्क- सारंगपुर
मो. 8817337144

प्रीति दिपेन्द्र भट्ट
जन्मदि. 20-3-1986
समय- 17.30 (5.30 पी.एम.) जयपुर
गौत्र- कश्यप, कद- 5'2"
शिक्षा- बी.ई. (आय.टी.), एम.बी.ए. (फायनेंस एण्ड एचआर)
सम्पर्क- मो. 07742921092

प्रिया बलराम नागर
जन्मदि. 23-5-1991
समय- 5 ए.एम., कद- 5'2"
शिक्षा- एम.बी.ए.
गौत्र- कश्यप
सम्पर्क- मो.9839056863

श्रेया स्व.श्री सतीश नागर
जन्मदि. 4-5-1986, 12.29 पी.एम., लखनऊ

शिक्षा- एम.बी.ए. फ्रॉम सिम्बायोसिस डिप्लोमा इन एविएशन एंड हास्पीटलीटी मैनेजमेन्ट ए.एच.ए. जयपुर
कार्यरत-एयर होस्टेस इंडिगो एयर लाईंस, जयपुर
सम्पर्क- जयपुर फोन 0141-2451127,
मो. 09309069276

अर्पणा अरुण शंकर याज्ञिक
जन्मदि. 19-02-1993
समय- 13.50, सवाई माधोपुर (राज.)
शिक्षा- बी.ए. (इंग्लिश), बी.एस.टी.सी., आर.टी.ई.टी., सी.टी.ई.टी., एम.ए. अध्ययनरत
सम्पर्क- मो. 8764076354, 09667290857

मिताली प्रभाशंकर मेहता
जन्मदि. 8-9-1989,
प्रातः 5.55, मन्दसौर
वजन- 48 (मंगल है)
शिक्षा- बी.एस.सी. (बायोटेक्नॉलॉजी), बी.एड., एम.बी.ए. (तलाकशुदा)
कार्यरत- ए.पी.सी. स्कूल प्रतापगढ़ (राज.)
सम्पर्क- 07422400029, 9926056561

स्नेहा मुकेश नागर
जन्मदि. 13-7-1987
प्रातः 12.01 ए.एम., इन्दौर
शिक्षा- एम.टेक.
कार्यरत- असिस्टेंट प्रोफेसर
सम्पर्क- इन्दौर
मो. 9826123450

पूजा बद्री शर्मा
जन्मदि. 24-6-1992
प्रातः 10.57, उज्जैन
शिक्षा- बी.कॉम. कम्प्यूटर एप्लीकेशन
सम्पर्क- देवास
मो. 9827326222

नागर ब्राह्मण समाज में रिश्ते हेतु इच्छुक

शिप्रा दिनेश कौशिक (आदिगौड़ ब्राह्मण)
जन्मदि. 23-11-1985
समय- 5 ए.एम., कोटा (राज.), कद- 5'
शिक्षा- बी.ए., एनआईआईटी (साफ्टवेयर)
सम्पर्क- जयपुर (राज.)
09414673945, 9414673955

नागर ब्राह्मण समाज की वेबसाईट पर रिश्तों के लिए निःशुल्क पंजीयन करें
www.nagarmarriage.com

अजय शर्मा
दिनांक 2 अप्रैल 1993
बधाईकर्ता- सिद्धि, वारा, निकुंज, वैभवी

प्रीति रावल
17 अप्रैल 1990
हार्दिक शुभकामनाएँ
बधाईकर्ता- शर्मा फेमली नामली
मो. 8358878706

विधि नागर
जन्मदि. 5-3-2016
(प्रथम जन्म दिवस)
सुपुत्री- सौ.रिक्की-अमित शंकर नागर
शुभाकांक्षी- समस्त नागर परिवार, सवाई माधोपुर, झालावाड़ (राज.)

कु.टीशा
सुपुत्री- सौ.दीपिका जितेन्द्र नागर
17 मार्च
शुभाकांक्षी- नागर परिवार, देवास मो. 9039221272

कु. पूजा मेहता
12 मार्च
शुभाकांक्षी- राधिका अंकुश त्रिवेदी एवं समस्त त्रिवेदी मेहता परिवार, उज्जैन, इन्दौर

कु. मायरा नागर
सुपुत्री- ऋषि नागर, सवाई माधोपुर
5 फरवरी 2016
शुभाकांक्षी- समस्त नागर परिवार, सवाई माधोपुर (राज.)

कुलदीप नागर
सुपुत्र-बालकृष्ण-सौ.शीतल नागर
13 मार्च 2003
शुभाकांक्षी- समस्त नागर परिवार, मक्सी 9826508504

श्री अरविन्द कुमार जोशी- 21 मार्च
कु. नमामि जोशी 25 मार्च
श्रीमती जया-सू.नागर 27 मार्च
श्रीमती उषा अरविन्द जोशी - 28 मार्च
श्री श्रद्धेय व्रजेन्द्र नागर 31 मार्च
-जोशी नागर, जाधव, तिवारी, त्रिवेदी परिवार

प्रेषक - पी.आर.जोशी, इन्दौर

सुप्रसिद्ध भागवत कथाकार श्री राधेश्याम शर्मा (नागर) निवासी ब्यावरा के सुपुत्र वि.विजय एवं कटनी निवासी श्री नरेश कुमारजी की सुपुत्री आयुष्मती गुंजन का विवाह दिनांक 17 फरवरी 2016 को कटनी में संपन्न हुआ. हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं.

प्रेषक-ओ.पी. शर्मा भोपाल
9826047546

श्रीमती अंजना-गणेशराम पुराणिक- 5 अप्रैल
चि.आशीष कृष्णकांत व्यास- 6 अप्रैल
-पी.आर.जोशी

विमला कैलाशचन्द्र शर्मा
विवाह वर्षगांठ
21 अप्रैल 1982
33 वर्ष पूर्ण होने पर
हार्दिक बधाई। सिद्धि, वारा, निकुंज, वैभवी एवं गोलू, मो. 8358878706

श्री नागर प्रवक्ता मनोनीत

म.प्र. नागर ब्राह्मण समाज परिषद के अध्यक्ष श्री राजेश त्रिवेदी 'टमटा' ने शाजापुर जिला म.प्र वर्किंग जर्नलिस्ट युनियन के जिला अध्यक्ष युवा पत्रकार राजेश नागर (दैनिक अवन्तिका) को सामाजिक सेवा भावना की दृष्टिगत रखते हुवे तथा समाज को गतिविधियों में सकारात्मकता के साथ काम करने पर म.प्र.नागर ब्राह्मण समाज परिषद का प्रवक्ता मनोनीत किया है। नागर ब्राह्मण युवा परिषद के अध्यक्ष हेमन्त दुबे, आशीष नागर, (युवा भाजपा नेता), संजय नागर (भाजपा नेता), आशीष नागर (पप्पु) संजय नागर (महिला बाल विकास), राजेश नागर (पत्रकार) हितेश व्यास, अनिल नागर (पुलिस), विवेक शर्मा, विवेक मेहता, सुरेन्द्र मेहता, अजय व्यास (राम), प्रसुन मेहता, भरत शर्मा जैनेंद्र नागर, श्रीमती ममता नागर, श्रीमती विद्या नागर, श्रीमती बबीता नागर, श्रीमती मंजु नागर (पूर्व पार्षद), श्रीमती नेहा मेहता, श्रीमती ज्योति शर्मा, कविता नागर, श्रीमती श्रद्धा नागर, श्रीमती अनुराधा मेहता आदि समाजजन उपस्थित थे। श्री नागर को प्रवक्ता बनाने पर समाजजनों, इष्टमित्रों पत्रकारों ने बधाई दी।

श्री गोविन्द नागर के संचालन की प्रशंसा

सहयोगियों का आभार

विगत 25 दिसम्बर को उज्जैन में श्री हाटकेश्वर धाम में आयोजित युवा सम्मान समारोह कार्यक्रम का सफल संचालन करने के लिए श्री भगवती मंडल मुंबई के पदाधिकारियों ने श्री गोविन्द नागर का प्रशंसा संदेश भेजा है। उपरोक्त आयोजन के संचालन में श्री नागर ने जान और शान डाल दी थी। अपनी बात को प्रभावी ढंग से मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ रखने में वाकपटु श्री गोविन्द नागर का संचालन कौशल प्रशंसा के काबिल है। वे अपनी बात बगैर किसी लाग लपेट के स्पष्ट एवं बेखौफ कहने में माहिर है।

उपरोक्त आयोजन के घनघोर सहयोगियों के नाम विगत जनवरी-फरवरी संयुक्तांक में छपे हैं, उनके अलावा श्री अतुल मेहता, श्री अमित नागर (पंचोली), श्री अजय नागर, श्री कन्हैयालाल मेहता, श्री प्रमोद नागर आदि के हम आभारी हैं, इन सबने आयोजन को अविस्मरणीय एवं सफल बनाने में अपनी भूमिका अदा की।

नागर महिला मंडल की बैठक 19 मार्च को

नागर महिला मंडल इन्दौर की मासिक बैठक 19 मार्च 2016 को सायं 3.30 से 6.00 बजे तक श्रीमती शारदा मंडलोई (अध्यक्ष) के निवास स्थान पर रखी गई है। बैठक में उपभोक्ता दिवस, महिला दिवस एवं पावन पर्व होली के अवसर पर कविता पाठ आदि कार्यक्रम होंगे। कृपया उपरोक्त सूचना का विस्तार अन्य महिला सदस्यों तक करें तथा विस्तृत जानकारी हेतु निम्नलिखित मोबाईल पर सम्पर्क करें-

मो. 9826344266, 9425085052

जय हाटकेश वाणी के स्वामित्व एवं विवरण के सम्बन्ध में

घोषणा पत्र

फार्म 4 (नियम 3 देखिए)

1.	**प्रकाशन का स्थान**	- 20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर
2.	**प्रकाशन अवधि**	- मासिक
3.	**मुद्रक का नाम**	- मनीष शर्मा
	(क्या भारतीय नागरिक है)	- हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश का पता)	20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर
4.	प्रकाशक का नाम	- मनीष शर्मा
	(क्या भारतीय नागरिक है)	- हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश का पता)	20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर
5.	सम्पादक का नाम	- सौ.संगीता शर्मा
	(क्या भारतीय नागरिक है)	- हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश का पता)	20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर
6	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हो	- मनीष शर्मा - 20, जूनी कसेरा बाखल, - इन्दौर -

मैं **मनीष शर्मा** जय हाटकेश वाणी के लिए एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य है।

दिनांक 1-3-2016

मनीष शर्मा
प्रकाशक

ब्राह्मण समाज व्यवसाय में असफल क्यों?

धर्म शास्त्रों के अनुसार चार वर्ण हैं, जिनमें ब्राह्मण का कर्म धर्म का प्रचार, वैश्यों का व्यवसाय, क्षत्रिय का शासन एवं शुद्र का समाज की सेवा। दरअसल अपने वर्णानुसार कर्म करना प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है, परन्तु युग एवं परिस्थिति परिवर्तन के बाद आज किसी पर बंधन नहीं हैं। व्यापार हर वर्ण के लिए जरूरत है, क्योंकि समृद्धि का उपाय यही है। आमतौर से ब्राह्मण समाज व्यापार उद्योग क्षेत्र में असफल रहता है, इसके पीछे कुछ कारण है।

पारिवारिक एकता का अभाव- आमतौर से व्यापार एक व्यक्ति के बस की बात नहीं होती, इसमें कम-से-कम दो और अधिक लोग चाहिए, परन्तु वर्तमान समय में ज्यादातर परिवारों में एक-एक पुत्र है तथा जहाँ एक से अधिक पुत्र है वहां उनके बीच सामंजस्य नहीं है, कुछ परिवारों में एक से अधिक पुत्र हैं, वे अपने विवाह तक तो साथ में व्यापार कर लेते हैं, लेकिन विवाह के बाद निजी स्वार्थों के चलते परिवार एवं कारोबार दोनों प्रभावित होने लगते हैं। जबकि वैश्य वर्ण में देखा जाता है कि वे व्यापार को परिवार से अलग रखते हैं तथा इसीलिए सतत सफल रहते हैं।

साहस का अभाव- ब्राह्मण समाज में साहस का अभाव रहता है, जबकि व्यापार का सिद्धान्त है 'नो रिस्क, नो गेन' सैद्धांतिक रूप से ब्राह्मण समाज ईमानदार, सत्यवादी होता है, जो व्यापार के मान से मायनस पाईन्ट है। व्यापार को साम-दाम-दंड-भेद के सिद्धान्त पर चलाया जा सकता है तथा साहस की प्रवृत्ति भी जरुरी है। व्यापार के सिद्धांतों के अनुसार बगैर झूठ बोले एवं कालाबाजारी किए यह संभव नहीं है, शास्त्र भी व्यापार हेतु बोले गए झूठ को पाप की श्रेणी में नहीं मानते। कहा जाता है कि आटे में नमक के समान बेईमानी को मान्यता प्रदान की जाती है। अग्नि अत्यंत पवित्र होती है, परन्तु उसके साथ धुँआ भी होता है, अतः व्यापार के सिद्धांतों को स्वीकार करना जरुरी है।मेरा मानना है कि स्वाभावगत कमियों तथा पारिवारिक कारणों के चलते ब्राह्मण उद्यमी उल्लेखनीय प्रगति नहीं कर पाते हैं, जबकि उन्हीं के प्रतिद्वंदी वैश्य कहीं आगे रहते हैं। वर्तमान की आवश्यकता है कि ब्राह्मण भी व्यापार को अपनाए परन्तु वह कारोबार का सर्वे करने के साथ-साथ अपनी कमियों पर भी ध्यान लगाए ताकि आशातीत सफलता प्राप्त कर सकें।

इस विषय में अपने विचार 20 मार्च तक अवश्य लिख कर भेज देवें, उन्हें आगामी अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

-सम्पादक

यश ही दान का उद्देश्य नहीं

'दान' एक ऐसा शब्द है जिसके महत्व से प्रायः प्रत्येक जनमानस परिचित हैं, परन्तु दान शब्द के परोक्ष में छिपे गूढ़ अर्थ को जान लेना अत्यन्त आवश्यक है। दान का अर्थ किसी को कोई वस्तु बिना किसी स्वार्थ के दे देना ही नहीं अपितु इतने विनम्र भाव से प्रसन्नतापूर्वक अर्पित करना जैसे उस व्यक्ति के दान ले लेने से आप कृतज्ञ हुए हों। अर्थात् अनावश्यक प्रचार अथवा यश की अपेक्षा के बिना दान करना। महापुरुषों ने तो यहाँ तक कहा है कि दाएं हाथ द्वारा दिए गए दान का पता बाएँ हाथ को भी न लगने पाए। अन्य शब्दों में इसे गुप्तदान भी कह सकते हैं। प्रकट दान से अनंत गुना फल गुप्तदान द्वारा प्राप्त होता है। फिर चाहे दान किसी प्रकार का हो जैसे-

जीवनदान, अर्थदान, रक्तदान, श्रमदान, अंगदान, कन्यादान, विद्यादान, जलदान, वस्त्रदान, अन्नदान, गुप्तदान, स्वर्णदान, रजतदान, गौदान, आदि दान दानदाता यथाशक्ति करते हैं। क्षमादान भी दान का एक महत्वपूर्ण प्रकार है।

अपने विषय को स्पष्ट करने के लिए पाठकों से एक कहानी साझा करना चाहूँगी- किसी नगर में एक धनी व्यक्ति रहता था। समाज में उन्नति के लिए दिये गये दान से उसकी कीर्ति सर्वत्र फैली हुई थी। मंदिरों की सीढ़ियाँ हो, प्याऊ हो, गौशाला हो, सभी जगहों पर सेठजी का ही नाम दानदाता के रूप में अंकित रहता था। सेठजी की मृत्यु होने पर यमदूत उन्हें यमराज के पास ले गए और पूछा- 'इन्हें स्वर्गलोग ले जाएँ अथवा नर्क?" सेठजी मन ही मन गर्वित और निश्चित थे कि इतना दान देने पर स्वर्ग जाना तो तय है। किन्तु यमराज ने कहा- इन्हें नर्क ले जाओ।

सेठजी आश्चर्यचकित हो गए और बोले- मेरे साथ यह कैसा अंन्याय, जीवन पर्यन्त दान करने पर भी नर्क क्यों? यमराज ने कहा- यह सत्य है कि आपने अपने जीवन में बहुत दान दिया है, किन्तु वह धन ईमानदारी का न था और दान का पुण्य यश और कीर्ति के रूप में आपने धरती पर ही प्राप्त कर लिया। अब आपके खाते में पुण्य शेष नहीं रहा। अर्थात् धन का अर्जन भी ईमानदारी से हो और प्रत्येक व्यक्ति अपनी आय का दस प्रतिशत दान कार्य में लगाएं। इस प्रकार समाज की उन्नति भी होगी और पुण्य कोष भी संचित होता रहेगा। प्रसन्नता पूर्वक सुपात्र को दिये गए दान से दान प्राप्त करने वाला भी स्वयं को प्राप्त दान के बोझ तले दबा महसूस नहीं करता।

-डॉ.प्रीति धर्मेन्द्र मेहता
103, व्यासनगर, उज्जैन मो. 9407130831

दान देना एक उत्तम पूँजी निवेश है...

'द सेकेंड वेज़ ऑफ नॉलेज सोर्सेस ऑफ लाइफ' नामक पुस्तक के लेखक (एक अमेरिकन भारतीय) ने इस पुस्तक में धन के बारे में लिखा है कि 'धन' न तो इकट्ठा किया हुआ पैसा है, न वस्तु और न जमीन। धनी होने का सिर्फ इतना ही अर्थ है कि वह व्यक्ति अच्छी तरह से जीवन-यापन कर रहा हो, एवं अपने बच्चों की उचित परवरिश कर रहा हो, परन्तु सबसे अहम् बात यह है कि उसके पास इतनी तादाद में भलापन (कल्याण हित भाव) हो जिसे वह पर्याप्त मात्रा में दूसरों में बांटता हो (इनफ़ गुड टू गिव अवे) कितनी सुंदर अवधारणा है- धनी होने की।

एक बार एक उत्कृष्ट ब्रिटिश लोकोपकारी नागरिक मोज़ेज़ मॉन्टीफायर से किसी ने पूछा, सर! आपकी कीमत क्या है? कुछ देर सोचने के पश्चात् जवाब में मोज़ेज़ ने एक उचित राशि उसे बताई। प्रश्नकर्ता ने फिर पूछा कि आपका धन तो इस राशि से भी कहीं अधिक होगा? तब उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा- तुमने मुझसे यह नहीं पूछा था कि मेरे पास कितना धन है, तुमने तो मुझसे मेरी कीमत पूछी थी। सो मैंने हिसाब लगाकर तुम्हें वह राशि बताई जितनी मैंने इस वर्ष जरूरत मंदों में बांटी थी। आगे उन्होंने कहा कि हमारी कीमत उतनी होती है, जितनी मदद राशि (दान आदि) हम दूसरों की सहायतार्थ उन्हें देते हैं और उन्हें उससे कितनी तादाद में खुशी मिलती है। जी हाँ 'दान देना' एक उत्तम पूंजी निवेश है।

अभी-अभी सेवाधाम आश्रम में जन सहयोग से बने अवेदना केन्द्र में दान की दो अद्भुद मिसाल देखने में आई। मुम्बई में जन सहयोग से बने अवेदना केन्द्र में दान की दो अद्भुत मिसाल देखने में आई। मुम्बई के एक स्टील उद्यमी ने अपने स्वर्गीय पिता की स्मृति में करीब दो करोड़ रुपये दानस्वरूप दिये। वहीं गाजियाबाद के सेवानिवृत्त एक पेंशनर ने अपनी जिंदगीभर की जमापूंजी लगभग एक करोड़ रुपये केन्द्र को दान किये। इस अवेदना केन्द्र में निराश्रितों व मरणासन्न लोगों की निःस्वार्थ सेवा की जाती है।

शास्त्रों में तो 'दान' को हाथों का आभूषण कहा है-

'हस्तस्य भूषणम् दानम्'

आखिर कोई भी व्यक्ति धनी कैसे बनता है? क्या कठिन परिश्रम से कमाया गया धन उसे सुखी बनाता है? इस बारे में कुछेक धनिकों का यह मत है कि सुख तो उन्हें तब ही होता है जब उनमें सकारात्मक सोच हो या जब उन्हें आत्मविश्वास हो और जब वे इस धन में से कुछ हिस्सा आसपास के लोगों के जीवन में खुशी लाने में व्यय करते हों।खुशी तो देकर ही प्राप्त की जा सकती है। कुछ धनी तो अतुलनीय प्रकार से उत्कृष्ट (भले) और दिव्य होते हैं, किन्तु कुछ आकांक्षा के विपरीत। उनमें छिपा बैठा (लोभ का) दानव उभर आता है और तब वे निकृष्ठ और हानिकारक हो जाते हैं।

दानशीलता की भावना प्रकृति की अनंत उदारता की पहचान होने पर ही जागृत होती है। अपनी सफलता के साझेदारों में लाभांश बांटने के समान होता है 'दान'। सभी को, सभी समय, सभी परिस्थितियों में खुश देखने की भावना से सहायता करने की मनोवृत्ति ही व्यक्ति को सही मायने में 'धनी' बनाती है। इसके विपरित छीना-झपटी की मनोवृत्ति तो उसे कंगाल बना देती है। एक चीनी कहावत के अनुसार जो हाथ फूल बांटते हैं- बदले में उन हाथों में सुगंध आ ही जाती है।

विद्वान ओप्रा विनफ्रे कहते हैं कि यदि आप कुछ ऐसा पाना चाहते हैं जो आपने कहीं नहीं पाया तो आपको कुछ ऐसा करना चाहिए जो आपने पहले कभी नहीं किया हो। अतः जिन लोगों ने अब तक उस खुशी का अनुभव नहीं किया हो जो दूसरों की मदद करने पर हासिल होती है तो उन्हें ओप्रा के उक्त कथन पर अवश्य गौर करना चाहिए। अपनी वाणी में मधुरता घोलकर भी हम दूसरों को खुशी दे सकते हैं। संत तिरूवल्लुवर कहते हैं कि ऐसे मधुर भाषी व्यक्ति के पास दरिद्रता कभी नहीं फटकती। वाणी में यदि सत्यता हो तो और भी श्रेष्ठ है, क्योंकि ऐसी वाणी ही प्राणी मात्र के लिये हितकर होती है। जो व्यक्ति छोटे-छोटे मामलों में दूसरों की ओर ईमानदारी से मदद का हाथ बढ़ाते हैं उन्हें भरपूर सुख की अनुभूति होती है, ना कि उन्हें जो ऐसे मामलों में फकत अच्छी-अच्छी योजना बनाते या बड़े-बड़े वादे करते रहते हैं। ऐसे कार्यों की शुरुआत स्वस्फूर्त होती है।

सारा ब्रह्माण्ड ही एक अद्भुत रचना है। इसमें एक विशेष व्यवस्था व समरूपता है। इस व्यवस्था को एक सुसंगत गति देने का कार्य करते हैं सूर्य, चन्द्रमा, तारे, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, वृक्ष, प्राणी, परिंदे, सूक्ष्म जीव-जंतु एवं मानव भी। सारा ब्रह्माण्ड 'यज्ञ' के कारण ही कायम है। यज्ञ का अर्थ है निःस्वार्थ व समर्पण भावना से ओतप्रोत कर्म (आहूति) ब्रह्माण्ड का पहिया इसी आहूति के कारण घूमता रहता है, जो ब्रह्माण्ड की वेदी पर ये सभी निरंतर देते रहते हैं। सूर्य अपनी आहूति देता है तब बादल बनते हैं। बादल वर्षा देते हैं। वर्षा से उर्वराधनी पृथ्वी अन्न देती है। सभी देने का ही कार्य करते रहते हैं। ऐसे में मनुष्य को भी ब्रह्माण्ड की इस कृपा को कुछ अंश में लौटाना चाहिये, यही उसकी आहूति होगी। इसी से खुशी हासिल होगी। अर्थात् मनुष्य को दूसरों की खुशी के लिये स्वयं यज्ञमय जीवन जीना चाहिए।

और अब अंत में-

हम न सोचें हमें क्या मिला है,
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण।
फूल खुशियों के बांटे सभी को,
सब का जीवन ही बन जाए मधुबन।।

-मोरेश्वर मंडलोई, खंडवा

विषय- खुशी के बदले मिलती है खुशी

दान एवं उससे खुशी का दर्शन

सदा-सदा के लिये जन्म मरण के चक्र एवं बंधन से मुक्त होना, अर्थात् भगत्वप्राप्ति है। भारतीय धर्मशास्त्र के ग्रन्थों में इसके उपाय चारों युगों में वर्णित है। चारों युगों में सफल एवं सुखी मानव जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु धर्मशास्त्र के राजर्षि मनुजी ने चारों ही युगों के भिन्न-भिन्न चार साधन बताये हैं-

तपः परं कृतयुगे त्रेतायां ज्ञानमुच्यते।

द्वापरे यज्ञमेवाहुदनिमेकं कलौ युगे।।

सत्ययुग में तप, त्रेता में ज्ञान, द्वापर में यज्ञ और कलियुग में मात्र एक दान ही मनुष्य के कल्याण का परम साधन है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने दान की महिमा का वर्णन बहुत ही अल्प शब्दों में अत्यंत ही प्रभावशील ढंग से बताया है-

प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान।

जेन-केन बिधि दीन्हें दान करइ कल्यान।।

दान से ही मनुष्य का कल्याण एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है, किन्तु दान क्या किया जाए? वास्तव में दान के अनेक रूप है। कुछ में तो प्रत्यक्ष दान ऐसे हैं, जिसमें द्रव्य, (धन का) का विनियोग अर्थात् अर्जित धन का त्याग करना पड़ता है, जैसे- अन्नदान, जलदान, वस्त्रदान, भूमिदान, गृहदान, स्वर्णदान, शय्यादान, तुलादान, पिण्डदान, आरोग्यदान, गौदान, जलदान आदि।

दान पर विचार करने पर कुछ दान ऐसे भी है जिनके लिए हमें किसी भी प्रकार का धन व्यय नहीं करना पड़ता है। इस प्रकार दानों का भी कम महत्व नहीं है। जैसे- मधुरवचनों का दान, प्रेम का दान क्योंकि संसार में सबके प्रति प्रेम रखना ही एक प्रकार से परमात्मा के प्रति प्रेम है। आश्वासनदान का दान, निराश व्यक्ति के जीवन में नकारात्मकता से सकारात्मकता भर देता है। आजीविकादान व्यक्ति के परिवार के पालन-पोषण की व्यवस्था करता है। छायादान में वृक्षारोपण कर छायादान ही नहीं अपितु पर्यावरण की रक्षा का दान भी निर्मित हो जाता है। श्रमदान एवं भूदान के महत्व का प्रतिपादन श्रद्धेय विनोबाजी की शिक्षा से भरा है। हमारे आस-पास के वृद्ध या अशक्त व्यक्ति के छोटे-मोटे कार्य एवं बाजार से सामान लेकर कर सकते हैं जो कि दान की ही श्रेणी में आते हैं।

आधुनिक काल में शरीर के अंगों के दान का महत्व कम नहीं है। मानव शरीर 'शरीरं व्याधिमन्दिरम्' है। आज मानव जीवन कुछ असाध्य रोगों से ग्रस्त है। अतः रक्त दान, गुर्दा (किडनी) दान, नेत्रदान, यकृत (लीवर) दान कर इनका प्रत्यारोपण हो रहा है। कई लोग अपने जीवन काल में चिकित्सा विज्ञान के विद्यार्थियों को शरीर रचना ज्ञान के लिये मृत्युपश्चात शरीर दान वसीयत कर दे जाते हैं। उनके शरीर से हृदय, मज्जा एवं अस्थी भी दूसरे के जीवन को बचाने में काम आ रही है। इस सबसे बड़ा दान देश के लिये जीवनदान है।

इन दोनों के अतिरिक्त समयदान, क्षमादान, सम्मानदान, विद्यादान, पुण्यदान, जपदान, भक्तिदान, आशीषदान, गौदान, वस्त्रदान, कन्यादान, अभयदान आदि है। संक्षिप्त में हम शंकरजी के समान तो दानी नहीं बन सकते हैं, किन्तु हम कम से कम हरिशचन्द्र, राजाबलि, कर्ण, युधिष्ठिर एवं दधीची का दान स्मरण कर प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। इसलिये अर्थववेद में बताया है-

शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त सं किर।

सैकड़ों हाथों से इकट्ठा करो और हजारों हाथों से बाँटो

-डॉ.नरेन्द्र कुमार मेहता
'मानस शिरोमणि'
सिनीयर एम.आई.जी.103, व्यास नगर, ऋषि नगर, विस्तार उज्जैन
फोन 0734-2510708,
मो. 9424560115

लोग क्या सोचेंगे ? ? ? . 25 साल की उम्र तक हमें परवाह नहीं होती कि "लोग क्या सोचेंगे ? ? " . 50 साल की उम्र तक इसी डर में जीते हैं कि " लोग क्या सोचेंगे ! ! " . 50 साल के बाद पता चलता है कि . " हमारे बारे में कोई सोच ही नहीं रहा था ! ! ! "

बेटे के घर देर से आने पर.....

माँ: कहाँ था सारी रात ?

बेटा: EMOTIONAL फिल्म देखने गया था

"प्यारी माँ "

माँ: अन्दर तेरे पापा इंतज़ार कर रहे हैं अब वो दिखायेंगे ACTION फिल्म

"ज़ालिम बाप"

रामू : अमेरिका में कोई हमारा पता पूछेगा तो क्या बोलना होगा?

शामू : धोबी घाट।

रामू : और इंग्लिश में बोलना हो तो...

शामू : सिंपल है!!! Washington

श्री राम की दयालुता एवं सहन शीलता वर्तमान संदर्भ में

आज देश में चारों ओर सहनशीलता पर वाद-विवाद-आरोप-प्रत्यारोप सुनाई-दिखाई दे रहा है। बिना यह जाने समझे कि वे स्वयं कितने सहनशील है? यदि मानव आज असहनशील है तो इसका एक मात्र कारण भारतीय वैदिक संस्कृति से हमारा विलग होना अथवा उसकी उपेक्षा ही माना जा सकता है। आज भी यदि हम अपने वेद वाक्य 'महाजनस्य पतःपंशः' का अनुसरण करें तो यह असहनशीलता का पिशाच निश्चित ही नष्ट हो जाएगा। रामचरित मानस में श्रीराम का चरित सहनशीलता का ज्वलंत एवं अनुकरणीय उदाहरण है।

आइये आज इसी विषय पर कुछ विचार करें।

वैसे तो श्रीराम का सम्पूर्ण चरित्र ही सहनशीलता का उदाहरण है, क्योंकि श्रीराम एक मर्यादा पुरुषोत्तम है। ताड़का, मारीच, सुबाहु, बाली तथा रावण जैसे महाबलशाली राक्षसों को मृत्यु के घाट उतार देने वाले राम के मन में किंचित मात्र भी अहम नहीं है।

धनुष भंग पश्चात् परशुरामजी ने जनकजी पर क्रोधित होते हुए कहा 'कहु जड़ जनक धनुष के हि तोरा। पर मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने कितने सहज तथा सहनशील होकर उत्तर दिया है। 'नाथ शंभु धनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा। इतना ही नहीं जब परशुराम का क्रोध लक्ष्मण पर चरम पर पहुँच जाता है तो श्रीराम, क्रोधी मुनि में भी अपनी ही तरह सहनशीलता ही देखते हैं। यथा- करिय कृपा सिसु सेबक जानी, तुम्ह समशील धीर मुनि ग्यानी। अंत में श्रीराम अपनी सहनशीलता से ही परशुराम को शांत कर देते हैं।

राज्याभिषेक की घोषणा के पश्चात् वन-गमन के आदेश पर कौन विचलित न होगा? लेकिन श्री राम कितनी विनम्रता तथा सहजता से कैकई से कहते हैं।

सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी। जो पितु मातु वचन अनुरागी।

इतना ही नहीं वे वन गमन को अपना सौभाग्य मानते हुए पूर्ण स्वतंत्रता अनुभव करते हैं। उदाहरण देखिये-

नव गयंद रघुवीर मनु,
राज अलान समान।
छूट जानि वन गवनु सुनि,
उर अनंद अधिकान।।

राम अपनी माता से कहते हैं, माता, पिताजी ने मुझे अयोध्या का राज नहीं दिया तो क्या हुआ, वन का राज्य तो दिया है। जिससे मेरे सभी बड़े-बड़े कार्य निपट जाएंगे। यहाँ इस कथन में राम की सहनशीलता तथा धैर्य का महासागर हिलोरे लेता परिलक्षित हो रहा है।

लक्ष्मण जो बचपन से जीवन भर राम की सेवा में रहे वे तो श्रीराम के शील स्वभाव से भली भाँति परिचित है। इसीलिये तो वे कहते हैं-

नाथ सुहृद सुठि सरल चित,
सील सनेह निधान।।

राम की सहृदयता तो उस समय उफान आ जाती है, जब अस्थिसमूह देखकर राम प्रतिज्ञा करते हैं।

अस्थि समूह देखि रघुराया।
पूछी मुनिन्ह लागि अतिदाया।

और वहीं प्रतीज्ञा करते हैं।

निसिचर हीन कर हूँ महि,
भूज उठाइ पन कीन्ह।
सकल मुनिन्ह के आश्रमहिं,
जाहि जाहि सुख दीन।।

अरण्य काण्ड में तुलसी ने जयंत द्वारा भगवती सीता के चरण में चोंच मारने से रक्त प्रवाह होने लगा, जिसे देखकर श्रीराम ने जब जयंत पर सरकंडे का बाण चलाया तो तीनों लोकों में उसे बचाने वाला कोई नहीं मिला। नारद की सलाह पर अंततः उसे राम की ही शरण लेना पड़ी। वह त्राही-त्राही कर श्री राम-सीता के चरणों में गिर पड़ा। तब दयालु-शील निधान श्रीराम ने उसे यह समझाकर क्षमा कर दिया।

कीन्ह मोह बस द्रोह,
जद्यपि तेहि कर बध उचित।
प्रभु छाड़ेउकरि छोह,
को कृपाल रघुवीर सम।।

इसी प्रकार शबरी जब अपने आप को 'अधम जाति में जड़मति भारी' कहकर अपने आप को हीन दर्शाती है, तो श्री राम उस पर दया कर उसे सम्मानित करते हुए 'जाति पांति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई। सभी को परे रखकर भक्ति के रिश्ते को सर्वोच्च मानते हुए कहते हैं। कह रघुपति सुनु भामिनी बाता। मान हूँ एक भगति कर नाता। और इसीलिये वनोपज कंद मूलादि का बार-बार बखान कर खा रहे हैं। ये श्रीराम की दयालुता तथा निम्न जाति के प्रति उदार-विचार और व्यवहार है।

वर्षा एवं शरद ऋतु समाप्त हो जाने पर जब सुग्रीव ने राम की सुधि नहीं ली तो उन्होंने लक्ष्मण के समक्ष अपना रोष प्रकट किया तो लक्ष्मण ने धनुष पर बाण चढ़ा लिया लेकिन दयालु तथा सहनशील श्रीराम ने लक्ष्मण को समझाते हुए सुग्रीव के साथ कोई अभद्र व्यवहार न करते हुए मात्र उसे भय दिखलाकर ले आने को कहा।

भय देखाइ ले आय हु।
तात सखा सुग्रीव।

लंका कांड में शत्रु पत्नी मंदोदरी स्वयं श्री राम के दयालु एवं सहनशील स्वभाव की प्रशंसा सुन चुकी है। इसीलिये तो वह रावण को समझाते हुए राम को कृपा सिंधु कहती है।

कृपा सिंधु रघुनाथ भजि।
नाथ विमल जसु लेहु।।

रामचरित मानस में रामजन्म को तुलसी ने यह कहकर राम के चरित्र की भविष्यवाणी ही कर दी 'भये प्रगट कृपाला दीन दयाला' इसी कारण तुलसी ने मानस के विविध प्रसंगों में श्रीराम को अत्यंत दयालु, कृपानिधान तथा सहनशीलता निधान के रूप में प्रस्तुत किया है। कहते हैं न 'माता की गोदी बालक की पहली पाठशाला तथा माता पहली गुरु होती है। गोदी में ही बालक के संस्कारों का प्रस्फुटन तथा पोषण होता है। इसीलिये राम के जन्म लेते ही कौशल्या ने श्रीराम को पहली शिक्षा 'कीजै शिशु लीला, अति त्रिय शीला' (शालीनता) इन पंक्तियों में कौशल्या ने श्रीराम को अपनी शिशुलीला कृष्ण की तरह नटखट रूप में नहीं अपितु अतिशालीनता से भरी करने को कहा है। इसी शिक्षा का प्रभाव श्रीराम पर जीवन भर बना रहा। मानस इसकी साक्षी है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यदि हम बालकों में दयालुता तथा सहनशीलता का बीजारोपण चाहते हैं तो मानस के अध्ययन अध्यापन की उपजाऊ भूमि पर ये गुण सहज रूप से अंकुरित हो सकते हैं। मेरी दृष्टि में श्रीमद् भगवत गीता यदि संस्कृत की नीति निपुण ग्रंथ है तो रामचरित मानस मानवीय संवेदनाओं के अंकुरण एवं पोषण करने का अप्रतिम महाकाव्य है। मानस में मानवीय मर्यादा की पूर्णरूपेण पुष्टि हुई है।

इसीलिये हिन्दी साहित्य का यह ग्रंथ वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पठनीय एवं अनुकरणीय है।

-हरिनारायण नागर
(वरिष्ठ पत्रकार)
13 पं.रविशंकर नगर, स्टेशन रोड़, देवास
फोन 07272-222822,
मो. 9425948177

मौसम (भारत)

गरमी का मौसम आया, सूरज ने भी कहर बरपाया।
हाय गरमी हाय गरमी, हर कोई चिल्लाया।।
लू के थपेड़ों से हर कोई घबराया, अपने तन को ढाँकें ढूंढ़ी पेड़ों की छाया।
माटी के घड़ों से पानी पीकर, अपनी प्यास को बुझाया।
तपती सुलगती गरमी में, अचानक सौंधी सी खुशबू का झौंका सा आया।
सब ने कहा देखो बारिश का मौसम आया, धरती ने ओढ़ी धानी चुनरिया।
प्रफुल्लित मन से हर कोई गाने लगा, सावन आया सावन आया।
मेघों की गर्जन से, बिजली की चमक से, आसमान थर्राया।
लो सावन गया भादौ आया, उमस भरा दिन फिर से आया।
दशहरा गया दिवाली आयी, संग में अपने सरदी ले आयी।
लो जाड़े का मौसम आया, हवाएं शूल बन सूई सी चुभने लगी
कंपकंपाते हाथों को आग से तापते, गरम चाय की चुस्कियों से सरदी को हराया।
अब कहने लगे सरदी गयी बसन्त आया।
वन उपवन को फूलों की खुशबू ने महकाया, लो मधुमास आया।
धीरे से वनों में टेसू उगने लगे, वृक्षों से पत्ते पीले होकर गिरने लगे।
शाखाएं वीरान हुई, धरती पत्तों से ढकने लगी, मौसम ने कहा पतझड़ आया।
पुरवैय्या ने पत्तों को दूर भगाया, सूरज ने भी हवा को फिर से गरमाया।
सूरज जल्दी उगने लगा, शाम को देरी से ढलने लगा।
लो फिर से गरमी का मौसम आया।

मौसम (अमेरिका)

सरदी गयी, बसन्त आया, फूलों संग हरियाली लाया।
धीरे से गरमी का मौसम भी आया, पेड़ों का रंग और भी गहराया।
सूरज ने अपना कहर बरसाया, राह चलते कोई साया न पाया।
हाय-गरमी हाय गरमी हर कोई चिल्लाया।
पर अपने तन को ढककर नहीं रख पाया।
तभी हवा के सर्द झौंके आए, पत्तों ने अपना रंग बदल डाला।
हीरे से पीले, पीले से लाल हुए, कहने लगे फॉल (पतझड़) आया।
वृक्ष नग्न हो गये, हवा और पानी की मार से सिहर उठे।
तभी प्रकृति ने कुछ दया दिखलाई, वृक्षों को बर्फ की पतली चादर औढ़ाई
और कहा बहुत मार सही तुमने हवा और पानी के वेगों की
सरदी ने कहा अब मैं आयी हूँ, अपने संग बर्फ की मोटी चादर भी लायी हूँ।
जब तक हूँ मैं, इसे ओढ़कर तनिक विश्राम करो।
और बसन्त के आने का इंतजार करो।

-श्रीमती चन्द्रज्योति दवे
एफ-132 गौतम मार्ग, सी-स्कीम जयपुर (राज.)
मो. 9414921986

द्वन्द्वों में जो समभाव है, वही परमात्मा के प्रिय है

जीवन में द्वन्द्वों का बहुत महत्व है। सुख-दुख, भाव-अभाव, धूप-छाया, शत्रु-मित्र, ठण्डा-गरम, ये सब द्वन्द्व है। गीता में कहा है-

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्ण-सुखदुःखेषु समः संग-विवर्जितः।।

जो शत्रु-मित्र, मान-अपमान, सर्दी-गर्मी और सुख-दुःखादि द्वन्द्वों में सम है और आसक्ति से रहित है- वही परमात्मा को प्रिय है। आध्यात्मिक मार्ग में द्वन्द्वों से ऊपर उठना ही जीवन-लक्ष्य समझा जाता है। परन्तु व्यावहारिक-जीवन में इन द्वन्द्वों के अभाव में, जीवन की रसानुभूति कठिन हो जाती है। इसीलिए भर्तृहरि सत्पुरुषों का लक्षण बताते हुए कहते हैं कि 'विद्विषोऽप्यनुनय' अर्थात् द्वेष करने वाले को भी अनुनय एवं नम्रता से अनुकूल बना लो। सज्जन, द्वेष रखने वालों को भी स्वीकार करके अनुकूल बना लेते हैं। कबीर साहब कहते हैं-

निन्दक नियरे राखिए आंगन-कुटी छवाय

प्रश्न उठता है कि कोई किसी से द्वेष क्यों रखता है? और द्वेष का वास्तविक अर्थ क्या है? इस के उत्तर के लिए गीता का आश्रय लेना होगा-

इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ।

अर्थात् इन्द्रिय के बारे में यानि प्रत्येक इन्द्रिय के विषय में राग और द्वेष छिपे हुए हैं मनुष्य को इन दोनों के वश में नहीं होना चाहिए, क्योंकि ये दोनों ही मनुष्य के कल्याण मार्ग में विघ्न करने वाले महान शत्रु हैं।

इसका अर्थ ये हुआ कि राग और द्वेष यानि मित्रता एवं शत्रुता या अनुकूलता एवं प्रतिकूलता रुपी यह द्वन्द्व, जीवन का सहज स्वरूप है, किन्तु इसके अधीन हो जाना उचित नहीं है। सामान्य व्यक्ति और सत्पुरुष इन दोनों में यही अन्तर है। सामान्य व्यक्ति, द्वेष करने वाले के साथ शत्रुता का व्यवहार करेगा, परन्तु सज्जन, द्वेषी व्यक्ति के साथ भी सद्-व्यवहार, मित्रवत् व्यवहार करेगा। इस बात को समझने के लिए एक बोध-कथा बहुत प्रसिद्ध है।

एक बार एक सत्पुरुष गंगा में स्नान करने के बाद जल में खड़े दोनों हाथों की अंजलि में पानी लेकर सूर्य को अर्ध्य देने के लिए उद्यत हुए तो देखा कि गंगाजल में एक बिच्छु तैर रहा है। यह बिच्छू किनारे पर आने की कोशिश कर रहा है, पर प्रवाह इतना तेज है कि वह किनारे तक नहीं आ पा रहा है। इस पर सत्पुरुष ने अपनी अंजुलि में बिच्छू को उठाया और चाहा कि उसको किनारे पर रख दें, किन्तु इस बीच सत्पुरुष के हाथ में बिच्छू ने डंक मार दिया। इस डंक से पीड़ित सत्पुरुष की अंजलि छूट गई और बिच्छू फिर पानी में गिर गया।

सत्पुरुष ने फिर से उसे उठाया तो बिच्छू ने फिर उनके हाथ पर डंक मारा। काफी देर तक ये प्रक्रिया चलती रही तो साथ में खड़े एक व्यक्ति ने कहा कि आप, आखिर इस बिच्छू को छोड़ क्यों नहीं देते? तो उस सत्पुरुष ने उत्तर दिया कि जब बिच्छू अपने डंक मारने के स्वभाव को नहीं छोड़ता है तो मैं उसको बचाने वाले अपने स्वभाव को क्यों छोड़ूं? यह है सत्पुरुषों की महानता। इसी को ध्यान में रखकर भर्तृहरि कहते हैं कि 'विद्विषोऽप्यनुनय' हमसे कोई विद्वेष करें, शत्रुता रखें लेकिन हमें तो उनके साथ अनुनय-विनय का ही व्यवहार करना है। गीता के अनुसार कल्याण का, यही एक मार्ग है। जीवन में सच्चा-आनन्द तो द्वेष-मुक्ति से यानि समभाव से ही प्राप्त होगा।

-डॉ.रवीन्द्र नागर

वो दिल कहाँ से लाऊँ?

राधे विरह तर्ज (वो दिल कहाँ से लाऊँ)
वो दिल कहाँ से लाऊँ, जो मोहन तुम्हें भुला दे-2।
इतना मुझे बता दे-2, गोकुल से जाने वाले।
इतना तो तू बता दे-2, ओ मथुरा जाने वाले।
वो दिल...

(1) गोकुल को छोड़ प्यारे, मथुरा तूने बसाई-2।
कुब्जा सी दासी मोहन, मन को तेरे है भायी,
मन को तेरे है भायी।
कुब्जा को तू तो मोहन-2, मन में तेरे बसाये। वो दिल...

(2) तेरी याद में कन्हैया, बाबा भी तेरे रोवे-2।
बाबा भी तेरे रोवे मैया भी तेरी रोवे, भैया भी तेरा रोवे।
भैया भी तेरे रोवे।
भैया ने रो के मोहन, अँखियां भी है गंवाई। वो दिल..

(3) तेरी याद इतनी आवे, कैसे जिएंगे हम तो-2।
तेरी जुदाई का जहर, हमसे पिया ना जाए,
हमसे पिया ना जाए।
मेरे मन में ऐसी आवे-2, प्राण तजेंगे अब तो। वो दिल..

(4) बड़े निष्ठुर भए कन्हाई, बेर्दर्दी हो कन्हैया-2।
निर्मोही हो सांवरिया, नागर की दया ना आई,
नागर को ही बिसारी।
क्या भूल हुई है मुझसे-2, जरा इतना मुझे बता दे। वो दिल...

-सौ.सुमनलता नागर, मोहन बड़ोदिया

गंगासागर एक महातीर्थ

गंगासागर को तीर्थों का पिता कहा जाता है, अर्थात् गंगा सागर का अन्य तीर्थों की अपेक्षा अत्यधिक महत्व है। शायद यही कारण है कि जन साधारण में यह कहावत बहुत प्रचलित है- 'सब तीरथ बार बार, गंगा सागर एक बार।' गंगा जिस स्थान पर समुद्र में मिलती है, उसे गंगा सागर कहा गया है। इसे दो संदर्भों में देखा जा सकता है। प्रथम तो यह कि अन्य तीर्थों में अनेक बार जाने और दर्शन करने से जो पुण्य मिलता है, वह गंगा सागर के एक बार दर्शन करने से ही मिल जाता है। दूसरे संदर्भ के अनुसार प्राचीनकाल में गंगा सागर की यात्रा को अत्यन्त ही दुरुह माना जाता था, क्योंकि वहाँ की भौगोलिक स्थिति अत्यन्त दुर्गम थी और नौकाएँ प्रायः डूब जाया करती थीं।

डीघा (उड़ीसा-पश्चिम बंगाल की सीमा) से चित्तागौंग (बांग्लादेश) तक विस्तृत गंगा का पाट गंगा का मुहाना कहा जाता है। इसी मुहाने के बीचोबीच उत्तर से दक्षिण की ओर 35 कि.मी. और पश्चिम से पूर्व की ओर 15 कि.मी. क्षेत्रफल का टापू है जो कि गंगा की एक 10-12 कि.मी. चौड़ी धारा के रूप में प्रवाहित हुगली नदी सागर-संगम के पूर्वी तट पर स्थित है। इसे ही गंगा सागर कहते हैं।

गंगा सागर तीर्थ पहुँचने के लिए तीर्थ यात्रियों को हावड़ा रेलवे स्टेशन या दमदम एयरपोर्ट पहुँचना होता है। हावड़ा स्टेशन, बाबूघाट और धर्मतला से प्राइवेट बसें और सरकारी बसें आसानी से मिल जाती है। गंगा सागर जाने के लिए दो रास्ते हैं, लेकिन ये दोनों ही समुद्री रास्ते है, एक रास्ता नामखाना-चेमागुड़ी रूट कहलाता है और दूसरा हारवुड प्वाइंट-कचू बेड़िया। नामखाना या हार वुड प्वाइंट तक का रास्ता बस या कार से तय किया जाता है। हार वुड प्वाइंट को लाट नंबर 8 भी कहते हैं, हार वुड प्वाइंट-कचूबड़िया रास्ता अधिक ठीक माना जाता है। यहाँ पहुँचने के बाद समुद्री रास्ता तय करना पड़ता है। हार वुड प्वाइंट से समुद्री पोत द्वारा कचूबेड़िया पहुँचने में लगभग 30-35 मिनिट लगते हैं। वहाँ पहुंचकर बस स्टेण्ड में खड़ी किसी बस से 30 कि.मी. का रास्ता एक घंटे में तय करके गंगा सागर बस स्टेण्ड पहुँचना पड़ता है। इस बस स्टैण्ड से गंगा सागर तीर्थ लगभग डेढ़कि.मी. दूर है। इस प्रकार कोलकाता से सड़क और जलपथ मार्ग कुल 135 कि.मी. का लम्बा सफर पार करके तीर्थ यात्री गंगा सागर धाम पहुँचता है।

इस समय जहाँ गंगा सागर का मेला लगता है, पहले यहीं गंगा समुद्र से मिलती थी। अब यहाँ हुगली की एक छोटी सी धारा समुद्र से मिलती है। आज यहाँ सपाट मैदान है। जहाँ तक नजर जाती है, घना जंगल दिखलाई पड़ता है। मेले के दिनों में गंगा के किनारे स्थान बनाने के लिए कई कि.मीटर तक जंगलों को काट दिया जाता है। सागर द्वीप का एक छोर बंगाल की खाड़ी तो दूसरा छोर बांग्लादेश। सुन्दर वन को स्पर्श करता हुआ अथाह जलराशि वाला यह सम्पूर्ण क्षेत्र 27,706 वर्ग कि.मी. तक फैला हुआ है।

प्रत्येक वर्ष मकर संक्रान्ति 14 जनवरी को पड़ती है। 13 जनवरी को 12 बजे रात के बाद से ही श्रद्धालुओं का गंगा सागर में पुण्य स्नान का जो ताँता लगता है, वह 14 जनवरी को देर शाम तक जारी रहता है। लगभग 5 लाख श्रद्धालु वहाँ एकत्र होकर स्नान करते हैं। मेला आरम्भ होने के साथ ही समुद्र की रेत पर एक अस्थायी आधुनिक हाट की सभ्यता का वहाँ आजकल आकार उभर आता है, जिसमें साधु-संतों के शिविर, तीर्थ यात्री-शिविर, मीडिया-शिविर, हाट-बाजार और जेल से लेकर पुलिस-थाना तक देखा जा सकता है। वहाँ पर स्वच्छ जल की लगातार व्यवस्था और बिजली आपूर्ति सब कुछ जुटा लिया जाता है। हजारों की संख्या में त्रिपाल बाँधकर शिविर बनाए जाते हैं फिर भी असंख्य लोग रात्रि में समुद्री रेत पर सोते हैं। सदियों से लगते आ रहे गंगा सागर मेले में इस प्रकार अनेकों सुविधाएं वहाँ एकत्र हुए लोगों को राज्य सरकार अस्थायी रूप में उपलब्ध कराती है। कुछ लोग गंगासागर पर स्नान के साथ-साथ मुंडन और श्राद्ध तथा पिण्ड दान भी करते हैं। स्नान करने के पश्चात लोग कपिल मुनि के मंदिर में दर्शन करते हैं और पाँचवे दिन मेला समाप्त हो जाता है। (क्रमशः)

-गणेश शंकर नागर
शिवपुर, हावड़ा (प.बंगाल)

भारतीय संस्कृति और नारी, एक ही सिक्के के दो पहलू

भारतीय संस्कृति और भारतीय नारी एक दूसरे की पूरक है। जहाँ भारतीय संस्कृति का विचार मस्तिष्क में आता है। वहीं परदे के पीछे भारतीय नारी की छवि अंकित हो जाती है। ऐसा लगता है और स्पष्ट भी है कि भारतीय नारी और भारतीय संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू है।

आज विश्व 21वीं सदी की ओर अग्रसर है, हर क्षेत्र में इंसान अभूतपूर्व सफलता अर्जित कर रहा है। इस दृष्टि से भारत भी किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। भारत में भी चहुँमुखी विकास हो रहा है और हर क्षेत्र में भारतीय नारी का वर्चस्व स्थापित हो रहा है पर भारतीय संस्कृति के साथ अनादिकाल से भारतीय नारी ने अपने वर्चस्व को बनाए रखने के लिए भारतीय संस्कृति का ही सहारा लिया है।

भारतीय संस्कृति के इस फलीभूत वृक्ष की ओर दृष्टि जाती है तो हमें हरा भरा फलों से लदा वृक्ष ही दिखाई देता है उसकी जड़े नहीं। लेकिन जब हम अपनी दृष्टि को चारों ओर घुमाते हैं तो प्रत्येक भारतीय परिवार में इसकी जड़े दृष्टिगोचर होती है। संस्कृति को हरा-भरा रखने का सारा श्रेय नारी को ही जाता है, क्योंकि संस्कृति की भारतीयता को जीवित रखने का पूरा भार नारी शक्ति के कंधों पर ही है। पुरुष तो कमाकर देता है इस कारण वह दाता कहलाता है और स्त्री ग्रहण करती है इस कारण वह ग्रहिता और निर्माता कहलाती है। यदि आज के परिवेश में नारी कमाकर भी लाती है तो अपने लिये नहीं अपने परिवार की गाड़ी को संतुलित रूप से चलाने के लिये।

स्त्री अलग-अलग रूपों में महासरस्वती, महालक्ष्मी और महाकाली बनकर सृजन पालन और संहार करने के लिए मातृवत हमारा रक्षण करती है।

स्त्री का अर्थ है सक्त्री अर्थात तीनों गुणों की स्वामिनी जो समाज को कर्तव्यनिष्ठ बनाने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। महिला का अर्थ है। म+हिला अर्थात् जिसे अपने कर्तव्य पथ से कोई हिला न सके और नारी का अर्थ है न+अरी अर्थात् संसार में जिसका कोई शत्रु न हो।

भारतीय संस्कृति का आरम्भ कब हुआ यह तो हम नहीं बता सकते, लेकिन जब से इस सृष्टि का निर्माण हुआ है तब से ही हम भारतीय संस्कृति का जन्म मान ले तो कोई अतिश्योक्ति न होगी। वेदों और पुराणों का अध्ययन करने पर अधिकांशतः नारी चरित्र को ही ऐसा माध्यम बनाया है जो समाज के परिवेश में परिवर्तन ला सकती है।

शिशु के गर्भ में आने की प्रक्रिया से ही समाज के एक व्यक्ति के निर्माण की प्रक्रिया

शुरु हो जाती है। कहा जाता है कि गर्भस्थ शिशु पर उसकी माता के विचारों का बहुत प्रभाव पड़ता है। उसके आचार व्यवहार पर घर की बुजुर्ग महिला हमेशा ध्यान रखती है। उसके भावी शिशु के व्यक्तित्व को भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत करने के लिए विभिन्न अवसरों पर विभिन्न क्रियाकलापों का आयोजन किया जाता है।

प्राचीनकाल में गर्भ में शिशु के आगमन पर पुरावन संस्कार किया जाता था। पुरावन संस्कार की भाँति सीमान्तोदायन संस्कार भी शिशु के गर्भस्थ होते ही किया जाता है। आश्वालयन सुत्रकार ने इसका विधान चौथे महीने में ओर पारस्कर सुत्रकार ने छटे या आठवे मास में करने का कहा है। भगवान मनु ने इस संस्कार का फल गर्भाधान संस्कार के तुल्य ही निर्देश दिया है। यह वह समय होता है जब गर्भ एक साधारण माँस पिण्ड की अवस्था में हाथ, पाँव, आँख, नाक, कान तथा हृदय वाले व्यक्ति के रूप में परिणित हो रहा होता है। इस अवस्था में गर्भस्थ शिशु में चैतन्य शक्ति के प्रार्दुभाव के साथ माता में भी एक विलक्षण शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन होना प्रारम्भ हो जाता है। अब वह दोहीदा याने दो हृदय वाली हो जाती है। इस संसार पर वृद्धा स्त्रियों द्वारा दिये जाने वाला 'तू वीर माता बन आशीर्वाद एक ऐसे अलौकिक वातावरण की सृष्टि कर देता है, जिसकी स्मृति स्त्री के हृदय पटल पर चिरकाल के लिये अंकित हो जाती है।

शास्त्रकारों का कहना है कि इसीलिये गर्भवती स्त्री को रामायण, महाभारत आदि सद्ग्रन्थों का अनुशीलन करना चाहिए। माता के सद्विचारों का बालक के निर्मल स्वच्छ एवं अछूते हृदय पर अवश्य प्रभाव पड़ता है। इसका ज्वलंत उदाहरण है। अभिमन्यु का युद्ध पराक्रम।

हिरण्य कश्यप की पत्नी महारानी कयाधु ने संकल्प लिया था कि मैं भक्त बालक को ही जन्मूँगी और उस राक्षसी ने भक्त प्रहलाद को जन्म दिया। महारानी मदालसा ने अपने सात पुत्रों को दिव्य लोरियाँ सुना-सुनाकर विरक्त बनाया। पति की राज्य उत्तराधिकारी पुत्र की इच्छा पूरी करने के लिये गर्भावस्था से ही ऐसा श्रवण, मनन, चिन्तन किया कि आठवां पुत्र कुशल राजा बना।

भारत जैसा वीर बेटा जन्मा महारानी कैकयी ने उनका वह रूप जिसके कारण कभी वन्दिता व कभी निन्दिता दोनों बनी। इन माताओं के पवित्र त्याग व बलिदान की तुलना में सब बलिदान फीके हैं। संतान की निर्मात्री माता ही है। और संतान राष्ट्र की निधि है। संतानों से ही संस्कृति का विकास

होता है। संतान में संस्कृति का बीज नारी के द्वारा ही रोपा जाता है। अतः संस्कृति को हरा-भरा रखने का श्रेय नारी को ही जाता है।

विश्व में भारतीय संस्कृति को आज भी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। भारतीय ललनाए विश्व के किसी भी कोने में साड़ी में लिपटी सुसंस्कृत सभ्यता की प्रतीक समझी जाती है। भारत में ही नहीं विदेशों में रहने वाली भारतीय नारी भी अपने बच्चों का पालन पोषण स्वयं करना ही पसन्द करती है। घर में पकवान बना कर सभी को संतुष्ट करने के पश्चात् उसको जो आत्म सन्तुष्टी प्राप्त होती है, उसका कोई मूल्य नहीं है। व्यस्ततम जीवन बिताने वाली भारतीय नारी जितना सुख अपने परिवार में आकर महसूस करती है, उतना शायद उसे स्वर्ग में भी न मिले। और उसके सुखी रहने का कारण उस परिवेश में अपने आप को पाना है, जिसका निर्माण स्वयं उसने किया है। जहाँ अपनी संस्कृति के वृक्ष की हर पत्ती पर उसका ध्यान है। अपनी संस्कृति को फलों से लदा हुआ देखने की इच्छा से आज की नारी संस्कृति में थोड़ा बहुत परिवर्तन करने में भी नहीं हिचकिचाती।

आज भारतीय संस्कृति में जो परिवर्तन आ रहे हैं वे सदी के साथ चलने की इच्छा के कारण ही है और संस्कृति में समय के साथ परिवर्तन आवश्यक भी है। नहीं तो संसार उस संस्कृति को रुढ़ीवादी कहकर उसका मजाक करेगा। जहाँ पहले नारी सिर्फ घर की शोभा समझी जाती थी वहीं नारी के प्रयत्न द्वारा ही वह देश की शोभा है जिन संस्कारों के द्वारा वह समाज में थोड़ी भी रुकावट समझती है दृढ़ता के साथ उसका विरोध करती है।

नारी की शक्ति से घबराकर समाज में एक ऐसा वर्ग भी होता है जो नारी शक्ति के सामने अपने आपको गौरवान्वित न महसूस कर हीनभावना से ग्रसित हो जाता है। वह धार्मिक, आर्थिक व सामाजिक भय द्वारा उसके ऊपर कई प्रकार के प्रतिबन्ध लगाकर उसकी शक्ति को सीमित कर देना चाहता है। जैसे मध्यकाल में पर्दाप्रथा, सतीप्रथा, बालविवाह, अशिक्षा द्वारा नारी का शोषण करके भारतीय संस्कृति में एक पूर्ण विराम लगा देना चाहते थे। वहीं दूसरा वर्ग नारी शक्ति का सम्मान करके उन्हें उन रुढ़ीयों से घसीट कर आगे लाने का प्रयत्न करता है और नारी फिर अपनी शक्ति व स्थिति को समझकर समाज का सहारा लेकर दिन-प्रतिदिन युग युगान्तर तक अपनी संस्कृति को हरा भरा बनाए रखने के प्रयत्न में अपनी सारी शक्ति को समर्पित कर देती है। आज भारतीय संस्कृति को विश्व में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। उसको सम्मानित रखने में भारतीय नारी अपना सर्वस्व होम कर सकती है।

आज हमारा समाज एक ऐसी दो राहे पर खड़ा है जहाँ एक ओर तो चकाचौंध दिखावा स्वच्छन्दता एवं पाश्चात्य प्रभाव से सम्मोहित सुन्दर साम्राज्य है वहीं दूसरी ओर सादगी, शालीनता, व्यवहारिकता, नम्रता एवं आदर भाव से सुशोभित राज्य है ऐसे दो राहे में किसे चुने किसे छोड़े के सोच विचार में नई पीढ़ी द्वीगीभूत हो रही है। दोनों में सामन्जस्य उत्पन्न कर संस्कारों को दूषित होने से बचाने का कार्य स्त्री ही कर सकती है। उत्थान, पतन, प्रकृति का स्वभाव है, स्वच्छन्दता पूर्ण पाश्चात्य चकाचौंध से बचाना और भारतीय संस्कारों को जीवित रखना हमारा धर्म है।

समाज में परिवर्तन होते ही रहते हैं। इन परिवर्तनों एवं विचारधाराओं का दृढ़ता से विरोध करने पर शायद ऐसा हो जाय कि हमारी उदित होने वाली पीढ़ी हमारा तिरस्कार कर के अपमानित एवं 18वीं सदी में जीने वाला मानव बताएं ऐसी स्थिति से बचने के लिये हमें सामन्जस्य स्थापित करना होगा। हमें हमारी संस्कृति एवं संस्कारों में समय के अनुसार लचीला बनाना होगा तथा संस्कारों की आड़ में जिन कुरीतियों का जन्म हो चुका है उन्हें मृत्यु की ओर ढकेलना होगा तभी हम अपनी आने वाली पीढ़ी को भारतीय संस्कृति की महानता से परिचित करवा सकते हैं अन्यथा हमारी नई पीढ़ी हमारा विरोध कर हमारी महान संस्कृति को पिछड़ा हुआ घोषित कर देगी। इस स्थिति में स्त्रियाँ ही नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी में सामन्जस्य बनाए रखकर भारतीय संस्कृति की सुन्दर एवं महान छवि को बनाए रख सकती है।

-श्रीमती सुधा व्यास
हरिगंज, ब्राह्मण पुरी, खण्डवा

भ्रामरी प्राणायाम करिए और तनाव मुक्त रहिए

प्राण+आयाम प्राणायाम का अर्थ है- प्राणों का आयाम या प्राणों का व्यायाम। प्राण वह शक्ति है जो सम्पूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त है। गहरी लंबी सांस से मनुष्य स्वस्थ्य रहकर अपनी आयु बढ़ा सकता है। सांप, हाथी, कछुआ आदि जानवर लंबी गहरी सांस लेते हैं। इस कारण उनकी आयु लंबी होती है और वे स्वस्थ भी रहते हैं। कुत्ता, खरगोश आदि जल्दी-जल्दी सांस लेते हैं, इसलिए उनकी आयु कम होती है। धीमी गति से सांस लेने पर दिल की धड़कन मंद रहती है। जो लंबी उम्र के साथ स्वस्थता प्रदान करती है।

कुल प्राणायाम 11 प्रकार के होते हैं, इनमें भ्रामरी प्रमुख हैं-

भ्रामरी प्राणायाम की विधि-

ध्यान के लिए किसी आरामदायक आसन में बैठिए। रीढ़ की हड्डी सीधी गर्दन व मुंह को सामने रखें। आंखें बंद रखें। चेहरे पर तनाव नहीं मुस्कुराहट रखें। शरीर, मन, मस्तिष्क को शिथिल रखें। मुंह बंद रखें। दोनों नासिकाओं से सांस लेना है। पहली अंगुली (अंगुठे के पास वाली) से कानों के छेद को बंद करें। भंवरे की गुंजन जैसी आवाज करेंगे। पहले पूरी सांस सीने में भरेंगे। फिर ओम का उच्चारण इस प्रकार करेंगे, जिससे म को लंबा ले जाएंगे। यह क्रिया एक वक्त में 10 बार करेंगे। समयानुसार सुबह एवं शाम को भी कर सकते हैं।

लाभः- मानव शरीर का स्वामी मस्तिष्क है जो कर्मेन्द्रियों के द्वारा पूर्ण शरीर का संचालन करता है। ये कर्मेन्द्रियां हैं दृष्टि, स्वाद, श्रवण, शरीर संचालन, स्पर्श, आवाज, गंध आदि। इन कर्मेन्द्रियों को सुचारू रूप से संचालन करने के लिए नाड़ी या नाड़ियों से रक्त पहुँचता है। भ्रामरी प्राणायाम द्वारा मस्तिष्क की संपूर्ण नाड़ियों को ध्वनि या कंपन द्वारा जाग्रत रखा जाता है। मानव की कई बीमारियों को रोकने में सहायक होता है। कान की बीमारी में लाभदायक है।

भ्रामरी से मानसिक तनाव, क्रोध, चिंता, अवसाद, उच्च रक्तचाप ठीक होने में सहायता होती है। भ्रामरी प्राणायाम से मनुष्य का मन विचाररहित हो जाता है, खाली हो जाता है। नियमित भ्रामरी प्राणायाम से साधक अपने इष्ट देव को अंतर्मन से देख सकेंगे।

भ्रामरी करने से मनुष्य का अंतर्मन शांत होने लगता है। मन के शांत और स्वस्थ होने से शरीर पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। नींद अच्छी आती है। अनिद्रा दूर होती है। पाचन क्रिया अच्छी होती है, हृदय, फेफड़े व मस्तिष्क संबंधी बीमारी ठीक होती है। मधुमेह, कोलेस्ट्राल, सांस की बीमारी, एलर्जी, माइग्रेन, मानसिक बीमारियां ठीक होती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित होती है। मुख पर ओज, चमक आ जाती है।

मनुष्य को प्रतिदिन अपनी शक्ति के अनुसार सुबह-शाम घूमना चाहिए। रात को भोजन सुपाच्य सोने के 2 घंटे पहले करना चाहिए। दिन में एक वक्त दिल खोलकर हंसना चाहिए।

-ए.के.रावल (योग विशेषज्ञ)
25, पत्रकार कॉलोनी, इन्दौर

काँचनार (सोनापत्ती) का औषधीय उपयोग

काँचनार का वृक्ष प्रायः जंगलों में होता है, किन्तु आजकल शहरों एवं गाँवों में भी सड़कों के किनारे इसके पेड़ लगाये जाते हैं। काँचनार के वृक्ष 15-20 फीट ऊँचे शिखाएँ नाजुक झुकी हुई, पत्र युग्म (दो पत्ते एक साथ जुड़े हुए) हृदयाकृति होते हैं। इसके पुष्प बड़े आकार के श्वेत, बैंगनी या गुलाबी होते हैं। इसकी फली 6 से 12 इंच तक लम्बी, चपटी होती है। जिसमें 10-15 बीज होते हैं। इसके बीज, छाल, पुष्प, बीज सभी का औषधीय उपयोग होता है। काँचनार का गुण वृणशोधन, वृणरोपण, मेंदोरोगहर कुष्टनाशक है। गण्डमाला या शरीर में कोई भी गाँठ हो उसमें इसका प्रयोग बहुत लाभकारी है। इससे शरीर में उत्पन्न सभी तरह की गाँठ ठीक होती है। कदाचित दशहरे उत्सव के अवसर पर सोनापत्ती के नाम से पत्रों का आदान-प्रदान का प्रचलन का उद्देश्य यही होगा कि आपस में व्यवहार सम्बंधि जो मतभेद की ग्रंथी बन गई हो वह ग्रंथी दूर होकर आपस में मधुर संबंध बने रहें। जिस प्रकार काँचनार का औषधीय प्रयोग शारीरिक ग्रंथी ठीक करता है और रोग शेष नहीं रहता है। ठीक उसी तरह आपस में यदि कोई गाँठ किसी कारण बनी हो तो इस पत्ती के आदान-प्रदान का प्रतिकात्मक प्रयोग आपस की ग्रंथी मिटाकर सामाजिक सौहार्द्र विकसित करता है। काँचनार से निर्मित प्रसिद्ध औषधि काँचनार गुग्गुल, काँचनारी क्वाथ, काँच गुटिका बाजार में उपलब्ध है। जिसका रोग निवारण के लिए उपयोग किया जा सकता है।

-डॉ.बालकृष्ण व्यास- LIGC 12/12, ऋषि नगर, उज्जैन, मो.9424045826

संत स्वभाव के सफल चिकित्सक-डॉ.सूर्यकांत पौराणिक भौंरासा

डॉ.सूर्यकांत पौराणिक का जन्म सुंदरसी (जिला शाजापुर) में श्रीमती मणीदेवी-श्री गोवर्द्धनलालजी पौराणिक के यहाँ 14 अगस्त 1932 में हुआ, आपकी प्रारम्भिक शिक्षा कमलापुर एवं करनावद में हुई। आपका बचपन, ज्यादातर दादा-दादी के पास बीता। 12 वर्ष की आयु में जावरा वैंकटेश्वर संस्कृत पाठशाला एवं छात्रावास में प्रवेश लिया। 5 वर्ष वहाँ अध्ययन के पश्चात् इन्दौर में राजकुमार सिंह आयुर्वेदिक कालेज से आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त की। स्नातक होकर 21 वर्ष की आयु में शासकीय सेवा प्रारम्भ की। सर्वप्रथम मंदसौर जिले के चन्दवासा ग्राम में आपकी नियुक्ति हुई, वहाँ से दो वर्ष बाद राऊ के नवीन आयुर्वेदिक औषधालय में स्थानांतरित हुए। उसके बाद बाग, टांडा, काछी बड़ौदा, देवास, नेवरी और अंत में भौंरासा में पदस्थ रहे। भौंरासा में आपने 22 वर्षों तक नौकरी की। वहाँ से अन्यत्र स्थानांतर एवं भौंरासा क्षेत्र में व्यापक लोकप्रियता के चलते शासकीय सेवा से स्वेच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली। अनेक वर्षों की लोक सेवा, उदारता, सेवा भावना, तथा सहृदयता से उन्होंने क्षेत्र की जनता का दिल जीता। वे अपनी शारीरिक अशक्तता के बावजूद वर्ष 2015 के मध्य तक अपनी सेवाएं देते रहे। पिछले सात माह से अधिक अस्वस्थता के चलते वे पूरी तरह आराम कर रहे थे तथा 25 फरवरी 2016 को उनका स्वर्गवास हो गया। मनुष्य शरीर तो नाशवान है परन्तु सद्कार्य एवं सद्स्वभाव सदैव अमर रहते हैं। संत स्वभाव के सफल चिकित्सक की अब यशकाया ही शेष हैं, वे सदैव स्मृति में रहेंगे तथा उनकी आगामी पीढ़ी उनके बताए रास्ते पर आगे बढ़ती रहेगी।

96 वर्ष की आयु में 96 जीवन जिये श्री कनूभाई मेहता

ऊर्जावान नागर रत्न, कर्मवीर एवं स्वतंत्रता सैनानी स्व.कनूभाई रेवाशंकरजी मेहता का स्वर्गवास दिनांक 27 जनवरी 2016 को हो गया।

श्री कनूभाई मेहता ने 1971 तक समाज के ट्रस्ट में ट्रस्टी और मानद् सहमंत्री के पद पर रहकर समाज की सेवा की। वे प्रखर गांधीवादी थे। उन्होंने आजीवन खादी के वस्त्र ही पहने वे अपने साथ आसपास के माहौल को भी हल्का कर देते थे। ऐसे हंसमुख स्वभाव के थे। कनूभाई मूल खेड़ा जिले के कठलाल तालुका के खड़ाल गांव के निवासी श्री रेवाशंकरजी मेहता के यहाँ जन्मे। जहाँ से वे अहमदाबाद खाड़िया में नागर बोर्डिंग में अध्ययन के लिए आए वहाँ पर कांग्रेस के सेवादल में भी जुड़ गए एवं सामाजिक प्रवृत्ति में जुट गए। इनका विवाह खाड़िया के निवासी स्व.श्री शांतिलालजी मेहता की सुपुत्री देविन्द्राबेन के साथ हुआ। एलिस ब्रिज एरिया में नागर मंडल की स्थापना श्री कनूभाई ने ही की थी। वे गली-मोहल्लों में जाकर नागरों के घर ढूंढते और उन्हें समाज के सदस्य बनाते। श्री मेहता ने पूज्य भगवानलाल (वाघ) पंड्या एवं स्व.मुकुंदराय मेहता के नेतृत्व में श्री विशनगर नागर विद्योत्तेजक मंडल में सहमंत्री के पद पर अपनी सेवाएं दी। उसके पश्चात् अ.भा. नागर परिषद् के गुजरात झोन के मंत्री पद पर सन् 1984-85 में तीन दिन का अभूतपूर्व अधिवेशन का आयोजन किया।

1967-68 से वे भादव महीने की पूर्णिमा को अहमदाबाद से अंबाजी जाने वाले पदयात्रियों की नियमित सेवा अर्चना करते थे। वे भजन भी बहुत अच्छे गाते थे।

स्वतंत्रता सैनानी के तौर पर उन्होंने अनेक बार जेल यात्रा की। वे गांधीजी को अपना आदर्श मानते थे, इसलिए गांधीवादी तरीके से अंग्रेजों का विरोध करते थे। इसलिए भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने दिल्ली में राष्ट्रपति भवन बुलाकर उन्हें सम्मान के साथ अवार्ड दिया।

- सन् 1942 में अहमदाबाद में रेडियो स्टेशन की स्थापना के समय से ही ये उससे जुड़े हुए थे। तथा
- एवन ग्रेड आर्टिस्ट के तौर पर सेवाएं देते रहे।
- जिस जुबली मिल में काम करते थे उसके मालिक अंबालाल साराभाई परिवार के साथ इनके घनिष्ठ सम्बंध थे, परन्तु किसी प्रकार का कोई लाभ-लालच नहीं रखा।
- भारत में कहीं पर भी अतिवृष्टि, अकाल या भूकंप की घटना होती श्री मेहता अपनी मंडली लेकर तुरंत बचाव कार्य के लिए पहुँच जाते।
- मोरबी में मच्छू नदी की दुर्घटना में इनकी बचाव एवं राहत सेवा अविस्मरणीय है।

श्री मेहता 96 वर्ष की आयु में 96 जीवन जी चुके थे। ऐसे कर्मठ एवं मूक सेवक को गुजरात नागर परिषद् महामंडल ने क्रांति वीरांगना श्रीमती दुर्गाभाभी अवार्ड से सम्मानित किया था। परम कृपालु इष्टदेव हाटकेश दादा एवं माँ राजराजेश्वरी अंबाजी से विनती है कि वह आपको अपने चरणों में स्थान दें एवं आत्मा को शांति प्रदान करें।

-नरेशराजा- प्रमुख, मनु मेहता- उपप्रमुख,
जनक मेहता- मंत्रीश्री, सनत पंड्या- सहमंत्री

चिकित्सा सेवा को समर्पित थे

सर्वप्रिय डॉ.बी.आर.झा

डॉक्टर बी.आर.झा के नाम से विख्यात इलाहाबाद क्षेत्र के प्रसिद्ध बाल-रोग विशेषज्ञ डॉ.बलवंतराम झा का जन्म इलाहाबाद शहर के प्रतिष्ठित झा परिवार में 24 सितम्बर 1928 को हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय सी.ए.वी. तथा इविंग क्रिश्चियन कालेज में विज्ञान के प्रचलित विषयों को लेकर हुई। स्नातकोत्तर शिक्षा हेतु उन्होंने अपने पिता डॉ.कृष्णाराम झा का अनुसरण करते हुए King George Med. College लखनऊ से एम.बी.बी.एस. की डिग्री हांसिल की। उन दिनों उनके पिता डॉ.कृष्णाराम झा का नाम पूरे क्षेत्र में प्रतिष्ठापित था। तथापि युवा डॉ.बी.आर. झा अपने अंग्रेजों के आशीर्वाद ('पढ़ो लिखो आगे बढ़ो और अपने परिवार के यश की अभिवृद्धि करो') को अपना ध्येय बनाकर आगामी विशेषता (स्पेशलाइजेशन) के लिए समुद्री जहाज से लंदन चले गये। वहाँ से 'बाल रोग विशेषज्ञ' की विशिष्ट योग्यता (डी.सी.एच. लंदन) लेकर अपनी कर्मभूमि इलाहाबाद वापस लौटे और चिल्ड्रेन हास्पिटल में कंसलटेण्ट नियुक्त हुए।

यहीं से वह यात्रा प्रारम्भ हुई जो लगभग साठ वर्षों तक अथक जारी रही। अपनी प्राइवेट प्रैक्टिस के साथ ही लगभग सभी स्थानीय मेडिकल संस्थानों के विजिटिंग कन्सलटेंट बने रहे। अपनी अत्यधिक व्यस्तता के बावजूद वे रामकृष्ण मिशन हास्पिटल तथा अन्य स्वयं सेवी संस्थानों में नियमित रूप से निःशुल्क सेवा का योगदान करते रहे। वात्सल्य पूर्ण-अपनत्व की अपनी वार्ता शैली एवं दक्षता के कारण वह शीघ्र ही इलाहाबाद, फतेहपुर, बांदा, प्रतापगढ़, मिर्जापुर आदि समीपवर्ती जिलों में सर्वाधिक लोकप्रिय एवं सफल डॉक्टर के रूप में जाने-माने बन गये। बच्चों के इलाज में अपनी महारत (अनुभव) की वजह से वह हिन्दू, मुसलमान, गरीब-अमीर, शहरी-ग्रामीण सभी वर्गों की माताओं-बच्चों और बेटियों के बीच बच्चों के सरल और सटीक इलाज के लिए एक घरेलू नाम बन गये और बड़ी ही कम उम्र में उन्होंने अभूतपूर्व इज्जत कमाई।

यदा-कदा वह अपने परोपकारी स्वभाव के अनुरूप गरीब परिवार के बच्चों के इलाज के लिए बिना किसी उल्लेख की भावना के मुफ्त दवाएं देते और व्यक्तिगत आर्थिक मदद किया करते थे। संडे हाफ डे को अपनाते हुए भी आकस्मिक रूप से बीमार बच्चों के इलाज के लिए रात-दिन सदैव तत्पर रहते थे।

आकर्षक व्यक्तित्व के धनी डॉ.बी.आर. झा एलोपैथी चिकित्सा जगत के अतिरिक्त मिलनसार स्वभाव के कारण इलाहाबाद के सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में घुले मिले थे। उनके मित्रों में डॉक्टर, व्यापारी, उद्योगपति, न्यायमूर्ति, प्रोफेसर, राजनेता क्रिकेट के खिलाड़ी व मुहल्ले के सहपाठी माघ मेला की खिचड़ी की तरह विद्यमान थे। बचपन में 'बल्लू', युवावस्था में क्रिकेट के खिलाड़ियों व मोहल्ले के लोगों में 'उस्ताद' के प्यार भरे सम्बोधन को सुनकर प्रायः खिलखिलाकर हंस पड़ते थे। व्यस्तता के उपरांत भी प्रयाग संगीत समिति के आयोजनों में उपस्थित रहना नहीं भूलते थे। अपनी हाजिर जवाबी व वसंत पंचमी के अवसर पर पतंगबाजी के अपने शौक के लिए वे जाने जाते थे। अपनी निजी व्यस्तता के बावजूद परिवार उनकी प्राथमिकता रहती। अपनी सफलता व छोटी बड़ी सभी उपलब्धियों का श्रेय अपनी पत्नी श्रीमती 'शारदा' को देना कभी नहीं भूलते। कुंभ मेला का भ्रमण, गंगा दर्शन वह सपरिवार अवश्य करते। भगवान शंकर के रुद्राभिषेक और किले के हनुमानजी पर उनकी अपार श्रद्धा थी। अपने आप में वे स्नेहिल व अंतमुर्खी थे। वह धर्मानुरूप कर्मनिष्ठ जीवनयापी अपने अंतिम समय तक बच्चों का इलाज करते रहे। इसका अभूतपूर्व दृश्य देखने को तब मिला जब एक ओर पुष्प मालाओं से सजी उनकी अंतिम यात्रा 10 अप्रैल 2015 को निकल रही थी व दूसरी ओर अपने बीमार बच्चों को गोद में उठाये हिन्दू व मुस्लिम माताएँ घर के दवाखाने में प्रवेश करते हुए पूछ रही थी। डॉक्टर साहब कब मिलेंगे? बच्चे को दिखाना है। परिवार जन दुखी और मौन थे, परिचारकों में से किसी ने उत्तर दिया- डॉक्टर साहब तो चले गये।

-डॉ.श्रीधर अग्निहोत्री
बी-32, सीमा अपार्टमेन्ट्स, प्लाट-7, द्वारका, सेक्टर 11, नई दिल्ली
मो.9899279765

16वां पुण्य स्मरण
स्व.श्रद्धेय जानकीलाल राधाकृष्ण जोशी
विद्वान, सद्गुणी, मिलनसार
12 मार्च 2016
-श्रद्धावनत- नागर, जाधव, तिवारी परिवार
-पी.आर. जोशी
उषा नगर, एक्स., इन्दौर

पुण्य स्मरण
(माँ) स्व.श्रीमती लक्ष्मीबाई (जीजी)
-राधाकृष्ण जोशी
वात्सल्य, अध्यात्म, आत्मीयता, सरल व्यवहार, कुशलता की प्रतिमूर्ति
श्रद्धावनत् - नागर, जाधव, तिवारी, परिवार
-पी.आर. जोशी

सुविचार

चिंता के समान शरीर का नाश करने वाला और कुछ नहीं है, सो जिसे ईश्वर में जरा सा भी विश्वास हो उसे किसी बात की चिंता करने की जरूरत नहीं।

दया एवं सहनशीलता की प्रतिमूर्ति प्रो.श्रीमती रश्मि नागर

कोई भी व्यक्ति जब आंतरिक गुणों से ओतप्रोत रहता है तो उसकी सहृदयता सभी के ऊपर प्रकट होती है। शांत स्वभाव सादगी, धैर्य, सदा मुस्कुराता चेहरा, समस्त गुणों से भरपूर प्रो.श्रीमती रश्मि नागर का 25 जनवरी 2016 को नई दिल्ली में देवलोक गमन हो गया।

स्व.रविशंकर शुक्ला की सुपुत्री प्रो.रश्मि नागर कुशाग्र बुद्धि एवं मेधावी छात्रा थी। शिक्षा एवं खेल क्षेत्र में आपने विशेष उपलब्धियाँ अर्जित की। आपका विवाह प्रो.बी.एल. नागर (प्रथम स्वर्ण पदक विक्रम विश्वविद्यालय) के सुपुत्र डॉ.राजेन्द्र कुमार नागर (एम.बी.बी.एस. एम.डी.) के साथ हुआ। आपके सहयोग एवं प्रोत्साहन से डॉ.राजेन्द्र नागर ने उपलब्धियों के क्षीतिज को छुआ तथा डॉक्टर पुत्री ने प्रथम प्रयास में आल इंडिया प्री पीजी में 47वीं रैंक प्राप्त कर वह वर्तमान में पी.जी. कर रही है। उनके पुत्र भी ऑल इंडिया पी.एम.टी. में प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण होकर एम.बी.बी.एस. कर रहे हैं। आपने उच्च स्तरीय अध्यापन एवं कुशल गृहणी के बीच बेहतरीन सामंजस्य स्थापित किया। आपके न रहने से जो शून्य उपस्थित हुआ है वह सभी के लिए अपूरणीय है। आपके कार्यों एवं आदर्शों को जारी रखकर ही सही मायने में श्रद्धांजलि दी जा सकेगी। आप प्रतिक्षण, प्रतिपल हमारी स्मृति में विद्यमान है तथा सदैव हमारी प्रेरणास्त्रोत बनी रहेंगी। पुनः भावभीनी आदरांजलि।

-सुश्री रुपम नागर
बी-26/4, वेदनगर, उज्जैन

निडर

जो न डरे किसी से, वो डरे अपनी ओलाद से
दुनिया को ठगकर, बड़े खुश होते हैं
खुद जब ठगाते हैं, तो रोने लग जाते हैं
लेखक ने पोथी में, ठीक ही लिखा है
आप ठगाओगे तो, सुखी हो जाओगे
ओरो को ठगोगे तो, दुःखी हो जाओगे
कबीर का लिखा तो, किताब में छोड़ दिया
दूसरा पथ तो, हमने चुन लिया
सुनना सबकी और, करना मन की
यही बात हम तो, घर पर कहते हैं
बुढ़ापे में बच्चे फिर, वही तो करते हैं।
करम को कोसते, आँसू ही बहाते हैं।
इसीलिये प्रमोद तो, सबसे डरता है।
सबसे ज्यादा अपनी सन्तान से डरता है।

जीवन में एक बार जो फैसला कर लिया तो फिर पीछे मुड़कर मत देखो। क्योंकि... पलट-पलट कर देखने वाले इतिहास नहीं बनाते।
-चन्द्र गुप्त मौर्य

ग़ज़ल (तेरी याद के सहारे)

दीये जलते रहे तेरी याद के सहारे
लोग मिलते रहे, तेरी याद के सहारे।।
आप तो पर्दे में चेहरा छुपाके चले हैं,
घर से हम निकलते रहे, तेरी याद के सहारे।
तुझसे शिकवा नहीं, है तो जमाने से मगर
हम तो चलते रहे, तेरी याद के सहारे।
कुछ वो तेरी यादें हैं और जहाँ का ग़म
किस्से भी सुनते रहे हैं, तेरी याद के सहारे
निगाहों की बैचेनी से तसल्ली न दिल को,
भारती फूल खिलते रहे, तेरी याद के सहारे

याद आई है...

याद आई है फिर तेरे फसाने की
बहारे रुठी हैं, फिर से जमाने की।।
मंजर वो देखा था हँसीन ख्वाबों का
शम्मा से लौ लगी थी, परवाने की।
वक्त ले रहा कैसी कैसी करवटें,
उम्मीदें क्यूं सो गई हैं दीवाने की
किस ओर मुड़ चला सफर का कारवाँ
बेखबर की क्या खबर है आने की?
मेरा वज़ूद तेरी लिखता रहा दास्तां,
भारती कसम क्यूँ खाई है रूठ जाने की?

-सुभाष नागर 'भारती', नागर मेडीकल स्टोर, अकलेरा

कोशिश इतनी करो

जीयो इतना कि जिन्दगी कम पड़ जाये
हंसो इतना कि रोना मुश्किल हो जाये
किसी चीज को पाना तो किस्मत की बात है।
मगर कोशिश इतनी करो कि
ईश्वर देने पर मजबूर हो जाए।

-संकलन-
कु.टीशा-जितेन्द्र नागर
मोती बंगला, देवास

इसमें है सुवास...

खुद ही हो आइना अपना, फिर कैसी यह आस,
अरुणोदय की बेला में, किया तुमने जो प्रवास।
बिन्दी हो या बिन्दु, इसमें है सुवास
करती हो जब धारण इसे, अच्युत हूँ मैं तुमसे।
कैसी प्रणय की यह प्यास, जिसका होता मुझे आभास,
यही विश्व में है व्याप्त, पा लिया जिसने है वही खास।
तुम ही हो कीर्ति मेरी, स्थिरता का सम्बल तुम्हीं से,
चुना गया है अनादिकाल से प्रेमरुपी शब्द सुमन को
सागर सा प्रतीत होता है, कराता है स्थिरता का आभास
शुद्ध सलिल की ही भाँति, अविरल रहो साथ।
करता हूँ, कामना यही, ईश्वर से करबद्ध आज
ओ मानव स्पर्शी मर्म के, तुम करना मत उपहास

-डॉ. महेश त्रिवेदी
ए-10/12, एम.आई.जी. महानन्दा, उज्जैन
मो. 9977469601

"कोई भी काम शुरू करने के पहले
तीन सवाल अपने आपसे पूछो ---
मैं ऐसा क्यों करने जा रहा हूँ ?
इसका क्या परिणाम होगा ?
क्या मैं सफल रहूँगा ?"

चाणक्य सूक्ति वाक्य

क्यूं न देता दर्शन है...

तू ही जगत का कर्तार है। माना कि तू भरतार है।।
तो भी न समझ सका, हृदय को। बना दिया उसर सा हृदय को।।
सब ही तो तेरे अर्पण है। फिर क्यूं न देता है दर्शन है।
मन भी बना दिया दर्पण है। अश्रु बिन्दु बहते श्रण है।
तुझे तब ही जगत का कर्ता कहूँगी, तेरे को श्रवण मैं करुंगी।
फिर न इधर-उधर भटकूंगी, अपने को ही कुबेर समझूंगी।।

हिंडोरा

झूले माई नंद किशोर हिंडोले।
ललिता चंपक लता विशार दा, देते हैं प्रेम झकोरे।
मानों बूंदन बरसन लागी, आज मन आनंद डोले।।
राधा के संग श्याम झुलत है। छवि देखत नाही लखोरे।
जय विद्या के प्रभू चन्द्र बिहारी, अब प्रभू आय मिलो रे।।
बृज बिहारी की छवि निरखत, लेत है प्रेम हिलोरे।।

विचित्र

"विचित्र सी मैं हूँ, विचित्र सा संसार है।
विचित्र सी दृष्टी से देखता संसार है।।
विचित्र से नर-नारी, प्रति सामने हैं।
विचित्र से स्वभाव से देते अपनी पहचान है।।
विचित्रता से भरे इस युग में समझ ले ब्रह्म को।
तीनों तापों से वार दे, ये जयविद्या के तन को।।

-जय विद्या झा, कोटा (राज.)

भारत का गौरव

BTF

STYLE OF TODAY

THE BOMBAY TEX FABRICS

SCHOOL UNIFORM

बॉम्बे मार्केटिंग एण्ड टेक्नालॉजी

64, कपोल निवास, दूसरी मंजिल , कमरा नं. 12 तीसरा कवेल क्रास लेन,
रामवाड़ी (भाजी गली) मुम्बई-400 002 फोन : 022-32403605
शान्ति भाई : 93226 42197, हुकमीचन्द भाई : 93237 87623, रंगराज भाई : 93235 13595

नागर घेवरचन्द जवानमलजी

विजयलक्ष्मी किराणा स्टोर्स

धणी रोड़, खुडाला स्टेशन, फालना जिला पाली (राज.)

75 वें जन्मदिन की हार्दिक बधाई

श्री कृष्णकांत व्यास

27 फरवरी 1941

-शुभाकांक्षी-

श्रीमती कृष्णकांता व्यास

141, राजस्व कॉलोनी, रतलाम एवं समस्त व्यास परिवार, रतलाम

भट्ट परिवार, खजराना गणेश मंदिर, इन्दौर, मेहता परिवार, गणराज नगर, खजराना

दवे परिवार, रतलाम, देरासरी परिवार, अहमदाबाद, त्रिवेदी परिवार, भोपाल

व्यास परिवार, उज्जैन, रावल परिवार, उदयपुर-रतलाम

094259-26059

RYDAK®

(RED)

रायडक चाय

कड़क स्वादिष्ट रायडक चाय

Marketed By : KANT & COMPANY LTD.

71, DR. RAJENDRA PRASAD SARANI, KOLKATA - 700001, PH.NO. 22309925

Local Address-

KANT & COMPANY LIMITED

306, Nariman Point, 96, Maharani Road, INDORE Mo.9300126194

मातुश्री दिवालीबाई एवं पिताश्री हजारीमलजी

की स्मृति में पुत्र पारसमल एवं अशोककुमार एवं परिवार द्वारा भावभीनी श्रृद्धांजली

नागर परिवार, शिवगंज (बरलुट) राज.

पिता

पिता जीवन है, संबल है, शक्ति है,
पिता सृष्टि के निर्माण की अभिव्यक्ति है।।
पिता उंगली पकड़े बच्चे का सहारा है,
पिता कभी कुछ खट्टा, कभी खारा भी है।।
पिता पालन है, पोषण है, परिवार का अनुशासन है,
पिता धौस से चलने वाला प्रेम का प्रशासन है।।
पिता रोटी है, कपड़ा है, मकान है,
पिता छोटे से परिंदे का बड़ा आसमान है।।
पिता अप्रदर्शित अनन्त प्यार है,
पिता है तो बच्चो को इन्तजार है।।
पिता से ही बच्चो के कई साकार सपने है,
पिता है तो बाजार के सारे खिलौने अपने है।।
पिता से परिवार मे प्रतिपल राग है,
पिता से ही माँ की बिंदी और सुहाग है।।

माँ

संवेदना है, भावना है, अहसास है माँ,
जीवन के फूलो मे खुशबू का वास है माँ।।
रोते हुए बच्चे का खुशनुमा पलना है माँ,
मरुस्थल मे नदी या मीठा-सा झरना है माँ।।
लोरी है, गीत है, प्यारी-सी थाप है माँ,
पूजा की थाली है, मंत्रो का जाप है माँ।।
आँखो का सिसकता हुआ किनारा है माँ,
गालो पर मीठी पप्पी है, ममता की धारा है माँ।।
झुलसते दिनो मे कोयल की बोली है माँ,
मेहंदी है, कुमकुम है, सिंदूर की रोली है माँ।।
कलम है, दवात है, स्याही है माँ,
परमात्मा की स्वयं एक गवाही है माँ।।
त्याग है, तपस्या है, सेवा है माँ,
अनुष्ठान है, साधना है, जीवन का हवन है माँ।।

नागर टी डिपो
शिवगंज (राज.)
09413247214 (पारसमल)

सीमा सिन्थेटिक्स
भिवण्डी (मुंबई)
09322187100 (अशोककुमार)

।। जय श्री कृष्णा ।।

पुण्य स्मरण

हमारे पूज्य एवं पद्मभूषण स्व. पं. भगवंतरावजी मंडलोई
(भतपूर्व मुख्यमंत्री, म.प्र.) के सुपुत्र

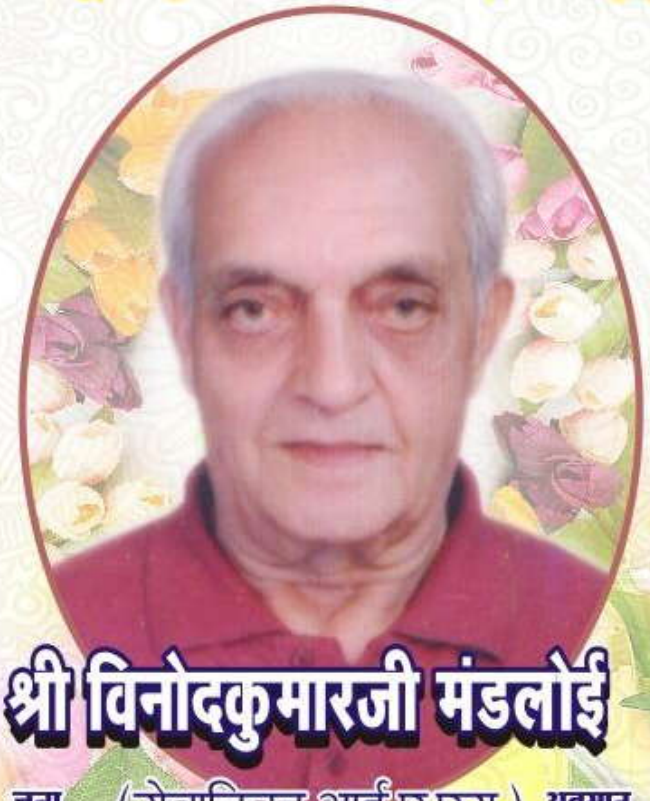

श्री विनोदकुमारजी मंडलोई

(सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)

जन्म
16 मार्च 1930

अवसान
29 मार्च 2013

की पुण्यतिथि पर

सादर श्रद्धांजलि

श्रद्धावनत

समस्त मंडलोई परिवार, जोशी परिवार एवं समस्त नागर समाज

MPHIN/2007/19763 जय हाटकेश वाणी डाक पंजीयन RO/IDC/42/2016-18

।। जय श्री कृष्ण ।।

चतुर्थ पुण्य स्मरण

आपकी यादों के सहारे...

श्रीमती आशा मेहता

अश्रुपूरित श्रद्धासुमन

ओमप्रकाश मेहता

एवं समस्त मेहता परिवार, भोपाल

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मनीष शर्मा द्वारा चैतन्य लोक प्रिंटर्स, 20, जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से मुद्रित एवं यहीं से प्रकाशित
सम्पादक : सौ. संगीता शर्मा (36) मो. 94250 63129
LATE POSTING